श्री

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तिथि से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा तिथि तक का काशीखण्डोक्त मन्दिर, तीर्थ स्नान, दर्शन का माहात्म्य सहित वर्णन. चैत्र कृष्ण पक्ष प्रतिपदा तिथी से प्रारम्भ करते है।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज (प्रयाग ...)

धर्म संघ, दुर्गा कुण्ड

वाराणसी

उत्तर प्रदेश (उ० प्र०)

29.X.92 — 29 X 92

काशी वार्षिक यात्रा कापी नं० 1

प्रयोजन

## २ काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र कृष्ण तृतीया तिथि के दिन प्रातः नित्य यात्रा करने के ~~पश्चात करने के पश्चात~~ "विश्वनाथ-अन्तर्गृही दर्शन यात्रा वार्षिक यात्रा" ~~विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा~~ प्रयत्न पूर्वक अवकाश लेकर करना चाहिए। विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा का प्रत्यक्ष फल इस प्रकार है। यात्रा करने वाले नर-नारियों के आलस्य, क्रोध, रोग, और विघ्न, दरिद्रता, ~~कष्ट~~ दूर हो जाते हैं।

~~(काशी खण्ड अध्याय-१००)~~

~~अन्तर्गृहस्य~~
प्रातः स्नानं विधायाऽऽदौ नत्वा पंच विनायकान ।६६।
नमस्कृत्वाऽथ विश्वेशं स्थित्वा निर्वाणमण्डपे।
अन्तर्गृहस्य यात्रांरौ करिष्येऽघौघशान्तये।।
।६६।

प्रथम प्रातःकाल में स्नान करे
तदनन्तर पञ्चविनायकों को नमस्कार करे
भगवान विश्वनाथ को नमस्कार करके
मुक्तिमण्डप में संकल्प करे कि मैं पापों की
शान्ति के लिए अन्तर्गृही यात्रा करूँगा।

# ३ काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

गृहीत्वा नियमं चेति गत्वाऽथ मणिकर्णिकाम्
॥९९॥
श्रध्दापूर्व मिमां यात्राः कर्तव्याक्षेत्रवासिभिः।
पर्वस्वपि विशेषेण कार्या यात्राश्च सर्वतः॥१००

(काशी खण्ड अध्याय १००)

अर्थ- काशी वासियों को श्रद्धा पूर्वक काशी की ~~सदा~~ यात्रा करनी चाहिये। वार्षिक पर्वों में ------- ~~प्रयत्न से~~ प्रयत्न करके काशी की परिक्रमा करनी चाहिए। विश्वनाथजी विष्णु भगवान से कहते हैं, हे विष्णु! काशी की परिक्रमा करने वाला और काशी में अन्न आदि दान करने वाला है दुःखी नहीं होता है। शास्त्रों में प्रमाण भी मिलता है कि—

इमां यात्रां नरः कृत्वा, क्षेत्रेऽस्मिन्मुक्तिजन्मनि
~~न दुःखैरभि भूयेत~~
न दुःखैरभि भूयेत, इहामुत्रापि कुत्रचित॥८२॥

(काशी खण्ड अध्याय १००)

अर्थ- मुक्ति जन्मस्थली काशी क्षेत्र में

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

काशी की यात्रा करने से मनुष्य इस लोक तथा परलोक में दुखों से पीड़ित नहीं होता है। काशी की प्रदक्षिणा करने वाले को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता। वह त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है। ~~(काशी खण्ड अध्याय 100)~~

काशी में मन, वाणी, शरीर से जो कर्म हुए हैं, उन पापों की निवृति हेतु श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर काशी की यात्रा करनी चाहिए। काशी में मल-मूत्र त्याग करने का जो दोष है उस दोष की निवृति के लिये यात्रा करना अनिवार्य है। अतः यात्रा करनी चाहिये।

अपने माता-पिता एवं परपितामह, पति-पत्नि आदि के नाम से काशी की यात्रा करनी और कराना चाहिए। चुंकि पितर नरक में अथवा पशुयोनि में गये हुये पितरों को सुख शान्ती और मुक्ति दिलाने के लिये प्रयत्न पूर्वक उनके

② # काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

नूतन से काशी की यात्रा करने भेजना चाहिए
~~नूतन~~ स्वयं करें
~~और करना चाहिए।~~
~~तिथि~~
~~चतुर्थी के दिन~~

(नोट :- अपनी जीवन बनाने के लिए और पितरों का उद्धार करने के लिए इस

नश्वर परिवर्तन शील जगत में यह नश्वर

क्षण भंगुर मल-मुत्र से भरा हुआ नाशवान

शरीर से जन्म मृत्यु रुप चक्कर से छुटने

के लिये विश्वराष्ट्र से काशी में आकर

काशी बास करते है। काशी में क्षेत्र संन्यास

लेकर जीवन प्रयन्त काशी बास करते हैं।

क्षेत्र संन्यास लेकर काशीबास करने वाले

नर, नारियों के आगे पीछे शंकर जी के गण

क्षेत्र संन्यासी की अंगरक्षा करते हैं। काशी

क्षेत्र में संन्यास लेकर काशीबास करने वाले

(९)

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

नर, नारियों को आवास भोजन आदि की व्यवस्था अन्न पुर्णा जी करती हैं। इस लिये प्रयत्न पूर्वक ~~चालिसं वे~~ चालिस वर्ष के ~~उमर होने के~~ पश्चात श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर विश्वास करके पति-पत्नि सहित अपने खानेकेलिये दीन दुःखीयों को देने के लिये और प्रति दिन दान करने के लिये शेष बचाकर ~~और~~ सब सम्पति पुत्र को सौंपकर काशी वास करने के लिये काशी में ~~जाना चाहिए~~ जाना चाहिए। ]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

# काशी की धार्मिक बाजार

काशी क्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवां प्रति प्रतिज्ञा द्वयम् ।

जीवतोऽन्नं ददासि त्वं मुक्तिं ददाम्यहम् ।।

भावार्थ - जब शंकरजी ने काशी की रचना कियी उसी समय भवानी अन्न पुर्णा जी से कहते हैं : हे शिवे अन्न पुर्णे तुम सभी काशी वासियों को भोजन, आवास, दो भक्ति और ज्ञान प्रदान करो। किसी भी काशी वासियों को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो। हे शिवे विशालाक्षी मैं मृत्यु के समय में सभी काशी वासियों को विश्वनाथ जी कहते हैं। कि मैं मुक्ति दे दुंगा। जब शंकर जी ने काशी की सृष्टी किया उसी समय शंकर जी ने सिर की एक जटा उखाड़कर जमीन में पटके तभी काल भैरव उसी जटा से प्रगट होकर हाथ जोड़कर सामने खड़ा हो गये, विश्वनाथ जी ने वरदान देकर

कारा

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

काल भैरव से कहा तुम काशी जाओ काशी वासियों की रक्षा करो और काशी में जो मनुष्य दुराचारी, भ्रष्टाचारी, चरित्र-हीन हो उनको काशी ~~से बाहर निकाले~~ दण्ड दो तथा सज्जन काशी वासियो की रक्षा करो काशी की सीमा की रक्षा करो, पापी ~~और दुराचारियों~~ को काशी के सीमा के अन्दर आने न पावे। इस प्रकार काल भैरव को प्रधान मंत्री बनाकर काशी भेजा। विश्वनाथ जी पार्वती भवानी जी सहित काशी आगये। काशी आने के पश्चात दण्ड पाणि जी को वरदान देकर कहे हे दण्ड पाणि तुम्हारे भ्रम विभ्रम दो गण सहयोगी होंगे। यह दो गण काशी में पाप करने वाला पापी, दुराचारी, भ्रष्टाचारी और काशी वास करने वाले को कष्ट देने वाला ~~तथा~~ व्यक्तियों को दण्ड दे देंगे।

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले मनुष्य धर्मशास्त्र में जीवन मुक्त माने जाते हैं।

अविमुक्तं समासाद्य नत्यजेन्मोक्ष कामुकः [कार॰

~~[काशी रहस्य]~~

अर्थः अविमुक्त काशी पुरी को प्राप्त करके काशी को कभी नहीं छोड़ना चाहिये। और काशी के प्रति दृढ़ विश्वास पुर्वक काशी में धर्माचरण और गङ्गा स्नान, (काशी की यात्रा) तथा प्रति दिन काशी के मंदिरों का दर्शन, शिव पूजन करने के पश्चात् प्रति दिन यथा शक्ति अन्न, पैसा, ऋतु फल मिष्ठान वस्त्र दान करते हुये। क्रोध, मोह, आसक्ति और लोभ एवं आलस्य को त्याग कर काशी में निवास करना चाहिये।

आदेश

उनको धन, ऐश्वर्य, सुख, शान्ती
देकर सुखी रखते है। वह

~~उपदेश~~

~~जो~~ काशी वास करने के लिए काशी में ~~आये~~ आये हुये हैं। उन स्त्री, पुरुषों को जो व्यक्ति आवास देता है दिलाता है। उन का हर सम्भव सहयोग करता है और कराते हैं। ऐसे मानव से विश्वनाथ, अन्नपूर्णा, काल भैरव प्रसन्न होकर काशी व्यक्ति सदा सुखी और मस्त रहता है चुंकि हमारे सनातन, वैदिक धर्म शास्त्रों में लिखा है कि काशी वासियों को सहयोग देने वाले भक्तों के प्रति दण्ड, पाणि, सुभ्रम विभ्रम एवं भैरव, अन्नपुर्णा और विश्वनाथ प्रसन्न होते हैं। इस लिये उस व्यक्ति को काशी में स्वर्ग का सुख प्राप्त कराते हैं। और अन्त में मोक्ष प्राप्त करते हैं तथा जन्म मृत्यु के चक्कर से छुट जाता है। धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि निष्काम सेवा करने वाला मन, वाणि से सत का

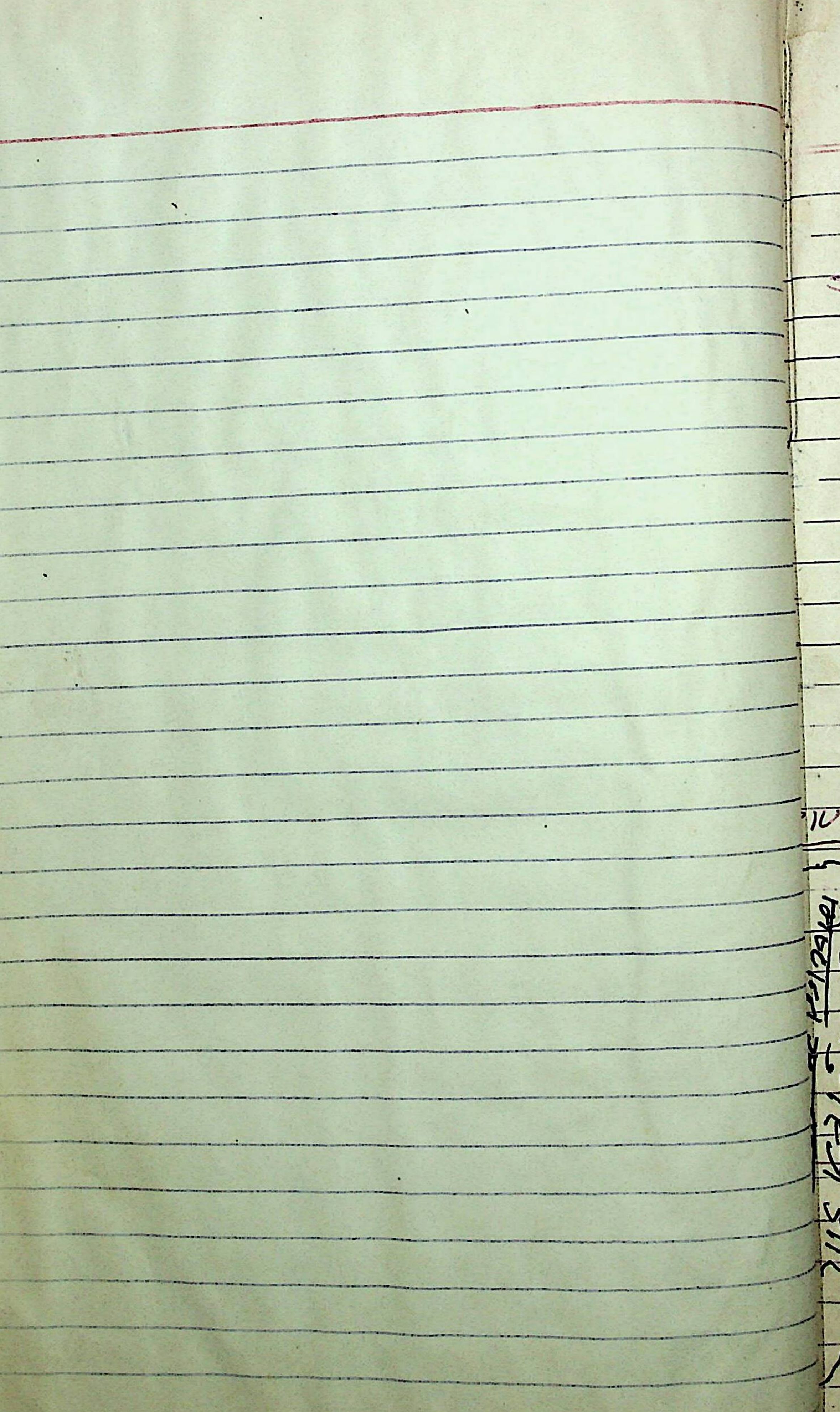
# काशी की धार्मिक दर्शनयात्रा

कल्याण चाहनेवाला परोपकारी सदा सुखी है ~~और जीवन मुक्त माना जाता है~~ मोक्ष माना गया है। जो नर, नारी ~~के~~ प्रति दिन निष्काम सेवा और परोपकार करते हैं। प्रतिदिन यथा-शक्ति दान करते हैं और प्रतिदिन दूसरे को भोजन कराते हैं। प्रति दिन मन से परोपकार की भावना रखते हैं। तथा दीन दुःखी, दरिद्र ~~नारायण~~ के प्रति दया रखते हैं। वह मनुष्य धन्य है और उनका ही संसार में जन्म लेना सफल है। भूखे को भोजन, नङ्गे को वस्त्र और रोगी को दवा - प्यासे को जल देना संत का दान है प्रयत्न पूर्वक देना चाहिए। भगवान का दिया हुआ यह नश्वर शरीर भगवान का दिया हुआ मन भगवान की दी हुयी वाणी भगवान की दी हुई

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

स्त्री, पुत्र, परिवार और धन सब भगवान का है। तुमने क्या लेकर आया थे और क्या लेकर जायेगे? भगवान की वस्तु परोपकार में लगा दो और दान करो, सत्-कर्म करते हुए जीवन यापन करो। अन्न क्षेत्र खोलो, सड़कों में सोया हुआ नाली में पड़ा हुआ रोगी अथवा जहाँ भी रोगी मिले उनको अस्पताल में भर्ती करो और उनकी सेवा करो। जन्म जन्मान्तर तक आपके शरीर में रोग नहीं आवेगा। निरोग बनना चाहते हो तो परोपकार करो। और सत्पात्र को दान करो। जो व्यक्ति धनी, लखपती, करोड़पति राजा हो धन प्राप्त कर परोपकार में धन नहीं लगाता, और यथा शक्ति दान नहीं करता वह

तीर्थों में तथा जगह-जगह अन्न क्षेत्र नहीं खोलता है। वह व्यक्ति अगले जन्म में महारोगी, अपङ्ग, अंगहीन और विद्याहीन होकर दरिद्र कुल में उत्पन्न होता है। वैद्य-डाक्टर पौष्टिक पदार्थ खाना मना करते हैं। ऐसे अवस्था में घर वाले ध्यान नहीं देते हैं। रूपया पौष्टिक पदार्थ भोजन के लिये तरसते रहते हैं, हाँ मेरा जीवन व्यर्थ है हाय मैंने पूर्व जन्म में कितना पाप किया था मैंने क्या पाप किया हाय कष्ट हाय कष्ट कहते हुये, जीवन व्यतीत करते हैं। इस नश्वर जीवन में कौन किसका है अपने-अपने जन्म जन्मान्तर का पुण्य, शुभकर्म और अपना अच्छा व्यवहार सदा साथ में रहता है॥ (सब का भगवान कल्याण करें।



# काशी की धार्मिक यात्रा

## दान - माहात्म्य

कलौ विश्वेश्वरो देवः कलौ वाराणसी पुरी ।
कलौ भागीरथी गंगा दानं कलियुगे महत् ॥
( काशी खंड . . . . )

अर्थ → कलियुग में देवता विश्वनाथ जी हैं, कलियुग में मुक्तिपुरी वाराणसी है, कलियुग में गङ्गा जी भागीरथी जी हैं, और कलियुग में दान देना ही महान यज्ञ है।

दत्वा दानानि भूरीणि मरवानिवहानि भूरिशः ।
वाराणसी जाह्नवीभ्यां संगमे लोक विश्रुते ॥
दत्वान्नदानं विधानेन न स भूयोऽभिजायते ॥
( लिङ्ग पुराण . . . . )

अर्थ → जिस मनुष्य ने काशी में अनेकों प्रकार के दान दिया है, मानो उसने अनेकों यज्ञ सम्पादित किया है। संसार में प्रसिद्ध काशी की गंगा और असी (वाराणसी के) नदी के संगम पर विधि पूर्वक अन्न आदि दान करने वाला व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता है।

दानान्यपि स्वस्व वित्तानुसारेण कुर्वानिधै ।
दूर्वापत्रं पुष्पजातं शिवेऽर्पितं ममोघकृत ॥
( काशी रहस्य . . . )

अर्थ → मनुष्य अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिदिन दान करें। दूर्वापत्र, फूल आदि वस्तु भी शिवार्पित करने से अमोघ अनन्त फल होकर प्राप्त होता है। और अन्न-वस्त्र, दूध, धन आदि भी उसी प्रकार से अनन्त गुणा होकर प्राप्त होता है।

अन्न, वस्त्र, धन, दूध और अक्षय आदि

जिनको उप
देश मिला मैं

# काशी की कार्तिक दर्शन यात्रा

काशी क्षेत्रे निवासश्च जाह्नवी
चरणोदकं ।
गुरुः विश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म
निश्चयः ॥
[ मत्स्य पुराण ]

अर्थ- काशी मोक्ष क्षेत्र में काशी वास करना, गङ्गा जल (चरणोदक) पीना और साक्षात विश्वनाथ भगवान का दर्शन करना ही कल्याण कारी है। विश्वनाथ गुरु भी अन्त समय मे तारक मन्त्र का उपदेश निश्चय ही देते है। तारका मन्त्र उन प्राणियों को पुनर्जन्म नही होता है।

काश्यां विश्वेश्वरो देव: संसार भयनाशनम्।
अनेक जन्म कृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ॥
३

अर्थ — ऋषि अगस्त्य जी ~~कहते हैं~~ से स्कन्द जी कहते हैं कि काशी में विश्वेश्वर देवता हैं, जो जन्म-मरण संसार के भय के नाशक हैं। जिनके दर्शन करने से अनेक जन्मों के पापों का नाश हो जाता है।

सत्यं सत्यं पुन: सत्यं सत्यं सत्यं पुन: पुन:।
द्रष्टव्यो विश्वेश्वरो नित्यं स्नातव्या मणिकर्णिका ॥
(काशीखण्ड, अ०-१००, श्लो०-१०५)

अर्थ → वेदव्यास जी सूत जी से कहते हैं कि मणिकर्णिका घाट गंगा जी में स्नान करके ~~बारबार~~ श्रद्धापूर्वक भगवान विश्वनाथ जी का दर्शन-पूजन करना चाहिए। बार-बार त्रिसत्य यही है।

~~येषां स्मरणो मात्र~~
येषां स्मरणतोऽप्यत्र भवेत् पापस्य संक्षय:।
दर्शन स्पर्शनाभ्याञ्च स्यातांस्वर्गापवर्गकौ ॥
(काशी खण्ड, अ०-६३, श्लो०-१४)

अर्थ → स्कन्द जी पार्वती जी से कहते हैं कि काशी के विश्वेश्वर लिङ्गों के स्मरण से पाप का नाश होता है, तथा दर्शन एवं स्पर्शन से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन प्रातः संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत होकर विश्वनाथ नित्य यात्रा करने के पश्चात ढुण्ढिराज जी के दर्शन, पूजन करके यात्रा जाने के लिए यात्री घर में जाकर पञ्चक्रोशी यात्रा में ले जाने के लिए सामग्री एकत्रित करके रखवें।

चैत्र कृष्ण पंचमी तिथि के दिन हरी हरानन्द सरस्वती (करपात्री जी महाराज) की वार्षिक पञ्च क्रोशी दर्शन यात्रा—

नोट

(मेरे गुरुजी की पञ्च क्रोशी यात्रा का विशेष महत्व, यह है कि मधु मास बसन्त ऋतु आयुर्वेद में पुराणों में धर्म शास्त्रों में कहा गया है कि बसन्त ऋतु में जल वायु बदलने वाला मानव एक वर्ष तक निरोग रहता है। स्कन्द पुराण में वेदव्यास जी लिखते है, बसन्त ऋतु में

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

तीर्थ, सन्त महात्मा और मन्दिरों का दर्शन यात्रा करनी चाहिए।

ब्रह्म निष्ठ ब्रह्म ज्ञानी सभी शास्त्रों के ज्ञाता और शास्त्रार्थ दिग्विजय १८ वर्षों की अवस्था से ही शास्त्रार्थ करना प्रारम्भ किया पूर्व में बंगाल पश्चिम में पाकिस्तान ~~पश्चिम~~ दक्षिण में कन्या कुमारी उत्तर में नेपाल तक जाकर शास्त्रार्थ किये कहीं भी परास्त नहीं हुए। चुँकि भगवती सरस्वती के उपासक थे। रात्री को ~~दस~~ ११ बजे ~~कस्क~~ २ गिलास ~~ग्लास~~ गौ का दूध पीकर सोते थे, रात्री के ~~एक~~ बजे ध्यान लगाते थे, तीन बजे

सडकमें बहुत तेज चलते थे
भ्रमण घुमने जाते थे। चार बजे घुमकर आते थे, पुनः स्नान करके आसन ध्यान करते थे। ध्यान के पश्चात। शिरसासन में पैर को ऊपर करके खड़े होकर दुर्गा सप्त सती का पुरा पाठ करते थे, पाठ करके शीर्षासन के पश्चात। पुजा करने बैठते थे। दोनों तरफ दीपक जलता था मेंज पर पुजा की सामग्री रखी जाती थी। शालिक राम और नर्मदेश्वर को स्नानकराकर पुजा करते थे। पुजा करने के पश्चात। रुद्री वेद के मंत्रो से अभिषेक करते थे। अभिषेक कर पुनः उत्तर पुजा करते थे। उत्तर पुजा के पश्चात शंख बजाते थे। उस धूनी से शंख बजाते जैसा कभी सुनने में नहीं आता। शंख के पश्चात सबको प्रसाद बाटते थे। जो विद्वान पढने

ॐ

आते थे। उनको पढाते थे व्याकरण वेदान्त, न्याय, मीमांसा और जो कोई भी शास्त्र लेकर आता था उनको पढा-ते थे और विशेष महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वह जो भी शास्त्र पढाते थे विधार्थियों को कण्ठस्थ होता था। यह बात किसी भी विद्वानों में नहीं पाया जाता ११ बजे तक पढाते थे ॥१

तथा पुनः स्नान करके मध्याह्न पुजा ~~करने~~ करने बैठते थे। पुजा के पश्चात शंख बजाते थे, शंख के आवाज सुनकर प्रसाद लेने के लिये सब आते थे। प्रसाद मिठाई फल स्वयं अपने हाथ से सब को देते थे। प्रसाद लेने राजा, महाराजा, करोडपती और रंक, दरिद्र ~~नारायण तक~~ सबको देते

(४)

थे। प्रसाद वितरण करके मिलने के
लिये आये हुये। ~~भगवान के भक्तों से~~
व्यक्तियों से
से मिलते थे। सब से बात करते थे। मध्याह्न
पुजा तक किसी से बात नहीं करते थे।
दुध फल का जलपान करते थे। एक घंटा
विश्राम करने के पश्चात। भक्ति सुधा
रामायण, मीमांसा एवं वेदार्थ पारी
जात आदि सद्ग्रन्थ लिखते थे।
स्वामी जी 20 भाषा के विद्वान थे
सायं पाँच बजे हरी ~~स~~ सब्जी ~~का~~
रोटी
~~फुल्का~~ दलिया आदि हल्का भिक्षा
चौबीस घंटे में एक बार सायं
करते थे। पाँच बजे ~~से सात बजे तक~~
भिक्षा करते थे भिक्षा के पश्चात
सत्शास्त्रों का उपदेश करते थे कथा
के पश्चात नौ बजे तक सब से मिलते
थे। पुनः स्नान करके सायं पुजा करने

पञ्चकोसी यात्रा

बैठते थे । पूजा के पश्चात ~~भोग लगाकर~~ प्रसाद वितरण करते थे । एक गिलाश गाय का दुध पीते थे, नौ बजेके पश्चात किसी को भी मिलने की आज्ञा नहीं थी विशेष महत्व पुर्ण बात तो यह है कि ध्यान में बैठते ही प्राण को ब्रह्मरन्ध्र में चढाते थे। किसी भी समय प्राण को ब्रह्मरन्ध्र से उतार कर समाधी से उठते थे। यह महायोग की परम परा लुप्तसी होते जा रही है। ~~र~~ योग और वेदान्त के द्वारा विश्वराष्ट्र में भारत महान ~~है~~ कहा गया है।

~~स्वामी~~ योग दर्शन, वेदान्त दर्शन का शिक्षा विश्वमें कही भी नहीं है इस लिये भारत विश्वका गुरु है।

स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती —
(करपात्रीजी)
और सिद्ध महापुरुष पंचक्रोशी
~~महाराज~~ — स्वयं काशी की यात्रा कर रहे हैं। और लाखों भक्तों को प्रेरणा करके काशी की यात्रा करा रहे हैं। काशी की यात्रा का माहात्म्य, यात्रा करने के नियम आदि का उपदेश करते हुए। स्वामी जी के बायें और दाहिने तरफ चारों वेदों के प्रकाण्ड विद्वान वेदों की स्तुति करते हुए। धीरे-धीरे पंच क्रोशी की सड़क पर चलते हैं। बरगद, पीपल के पेड़ को और गौओं को दाहिने करके चलते हैं। अन्य यात्री काशी विश्वनाथ की जय घोष करते हुये ~~और~~ हर-हर महादेव की ध्वनि लगाते हुये कीर्तन करते हुये चलते हैं।

प्रत्येक पड़ाव में [illegible] (विश्रामस्थल में)
अन्न क्षेत्र चलता था। मध्याह्न पूजा
के पश्चात्। साधु-सन्तों संन्यासियों और
महात्माओं को स्वामी हरिहरानन्द जी
सरस्वती महाराज स्वयं खड़े होकर भोजन
कराते थे। वस्त्र देते थे। दीन दुःखी
दरिद्रनारायणों को भोजन वस्त्र दिलाते थे।
जिस धर्मशाला में स्वामीजी निवास करते थे
उसी धर्मशाला में तीन बजे के पश्चात् विद्वान
प्रवचन करते थे, अन्त में स्वामी जी की
कथा होती थी। हजारों नर-नारियाँ गाँव
और शहर से दर्शन करने तथा कथाश्रवण
करने के लिए आते थे। प्रायः कथा का
विषय पंच क्रोशी यात्रा, क्रोशी महात्म्य एवं
पंच नियम एवं काशी वास का नियम

काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास और फल का वर्णन करते थे। कथा में कहा करते थे कि प्रत्येक मनुष्य को अंत समय में काशी वास करने का संकल्प लेना चाहिये। काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करनेवाला व्यक्ति जीवन मुक्त है कहते थे और अन्त में स्वामीजीने स्वयं काशी क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास किये। काशी खण्ड और काशी महात्म्य छपवाने तथा काशी खण्डोक्त मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने एवं करने के विषय में भी ध्यान आकर्षित करते थे। मंदिरों का जीर्णोद्धार करनेवाले और करानेवाले नर-नारी जहाँ कहीं भी रहें उनकी मुक्ती अवश्य है। जो व्यक्ति सन्त महात्माओं को और धनी को प्रेरणा करके मंदिरों का जीर्णोद्धार कराता है। वह

व्यक्ति इस जन्म में सम्मान, प्रतिष्ठा ऐश्वर्य प्राप्त करता है। अंत में मोक्ष का भोगी बनता है। मंदिर, जलाशय और धर्मशाला निर्माण जीर्णोद्धार करने वाले मनुष्यों को इस लोक में सम्मान, सुख और धन प्राप्त ~~करता है~~। होता है ~~और~~ मुक्ति प्राप्त करता है। स्वामीजी प्रवचन में कहा करते थे। काशी मे पाँच प्रकार के पाप होते हैं उसकी निवृति के लिए काशी की पंचक्रोशी आदि यात्रा करना अनिवार्य है कहते थे।

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

जब से स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती जी महाराज पञ्चक्रोशी यात्रा करने लगे उसी दिन से काशी ब्रह्मनाल के निवासी बटुक प्रशाद शास्त्री जी पञ्चक्रोशी यात्रा में अन्नक्षेत्र आदि सब बेवस्था करते है। काशी के बाहर से आये हुए साधु महात्मा, सँन्यासी एवं गृहस्त बान प्रस्थ, ब्रह्मचारि सब को प्रेरणा करके यात्रा कराते है, सब का सुन्दर बेवस्था करते है। बटुक शास्त्री जी को विश्वनाथ अन्न पूर्णा जी के असीम कृपा है अपने परिवार सहित पैदल यात्रा स्वयं करते है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

करपात्री जी महाराज ब्रह्मलिन होने के पश्चात जगन्नाथ पुरी पिठाधीश्वर निरन्जन देव तीर्थ जगतगुरु शंकराचार्य जीने अपने सिस्यों के साथ काशी की पञ्च कोशी यात्रा किये। निरन्जन देव शंकराचार्य महाराज जीने काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने के पश्चात उत्तराधीकारी जगन्नाथ पुरी पिठाधिश्वर जगतगुरु शंकराचार्य निश्चलानन्द सरस्वती जी के महाराज जीने भी अपने भक्तों के साथ काशी की पञ्च कोशी यात्रा किये।

मलमास (अधिक मास) में १. काशी पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा

अधिक मास (मलमास) पुरुसोत्तम महिना के नाम से प्रसिद्ध है। अधिक मास में प्रतिदिन लगभग पच्चीस हजार यात्री आज भी पञ्चक्रोशी यात्रा करने के लिए नर-नारी दर्शन पूजन कीर्तन करते हुये जाते हैं। मणिकर्णिका घाट से दक्षिण अस्सी घाट से कर्दमेश्वर भीमचण्डी रामेश्वर एवं शिवपुर कपिल धारा आदि होते हुए मणिकर्णिका घाट तक पञ्चक्रोशी मार्ग के सड़क से पंतिबद्ध होकर यात्री चलते हैं।

हवाई जहाज से यात्रियों का दर्शन अच्छी प्रकार से होता है। पञ्चक्रोशी यात्रा करने के लिए भारत के सभी प्रान्तों से काशी में आकर यात्रा करते हैं। विदेशों से काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा करने आते हैं। नेपाल से भोटान से पूर्व बंगाल से एवं लङ्का एवं मारिशस से और विश्व राष्ट्र में रहनेवाले भारतीय काशी में आकर काशी की दर्शन यात्रा करते हैं। यह काशी की महिमा है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र कृष्ण ~~पक्ष~~ षष्ठि तिथि के दिन प्रातः अत्रिश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। अत्रिश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर मुहल्ला दत्तात्रेश्वर मठ नारद घाट]

चैत्र कृष्ण ~~पक्ष~~ सप्तमी तिथी के दिन शीतला देवी की वार्षिक दर्शन यात्रा ~~करें~~ करें। शीतला देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी॰ १८/१९ में मुहल्ला प्रयाग राज घाट]

चैत्र कृष्ण. अष्टमी तिथि के दिन सिद्धेश्वरी वार्षिक दर्शन यात्रा करें। सिद्धेश्वरी देव्यै नमः [सी॰ के॰ ७/१२४ में मुहल्ला ~~सिद्ध~~ सिद्धेश्वरी]

चैत्र कृष्ण अष्टमी तिथी के दिन बन्दी देवी दर्शन वार्षिक यात्रा करें। बन्दि देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी॰ १७/१०० में मुहल्ला प्रयाग राज घाट] बन्दी देवी जी की दर्शन पूजन करने वाले भक्तों के जेल में जो

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

कैदी बन्द है वह कैदी जेल से छूट जाते हैं

तपस्यपि मघे ऋक्षे भगदेवेऽथ फाल्गुने।
चित्राऋक्षे चैत्रमासि विशाखर्क्षे च माधवे॥
( - - - - - - - - - - )

अर्थ :- फाल्गुन मास में मघा नक्षत्र, भगवान विश्वनाथ जी का पूजन फाल्गुन में, चित्रा नक्षत्र में, चैत्र मास के विशाख नक्षत्र में, और वैशाख मास में विशाखा नक्षत्र में भगवान शिव का पूजन और उपासना करना चाहिये।

श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर व्रत रहकर शंकर जी का पूजा करने वाले नर नारियों को ऐश्वर्य की प्राप्ती होती है। ज्ञानवापी ईशान तीर्थाय नमः

एकादश्यामुपोष्यात्र प्राश्नाति चुलुकत्रयम्
हृदयेतस्य जायन्ते त्रीणि लिङ्गान्यसंशयम्

ईशान तीर्थे यः स्नात्वा विशेषात्सोम [illegible]
[ काशी रव० अ० [illegible] ।

अर्थ- यहाँ पर एकादशी तिथि को उपवास करे और तीन चुल्लू पानी पीता है उसके हृदय में निश्चित ही तीनों लिङ्गों का निवास होता है।
जो विशेष कर सोमवार को ईशान कोण में स्नान करके

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र कृष्ण ~~प्रेका दशी~~ एकादशी तिथी के दिन

विरमाधव दर्शन यात्रा विरमाधवाय

नमः मीर घाट [त्रिवर्ग॥४]

चैत्र कृष्ण त्रियोदशी प्रदोष के दिन

(महाप्रभु) "महावारूणी महापर्व"

"वारुणेन समा युक्ता मधोः कृष्णात्रयोदशी।

गङ्गायां यदि लभेत सूर्यग्रहशतैः समा॥

[स्कन्द पुराणे अ. ]

अर्थ चैत्र कृष्ण त्रियोदशी तिथि के दिन वारुणी और महाबारुणी महा पर्व है,

स्कन्दपुराण में कहा है- वारुणी शतभिषा नक्षत्र से युक्त हो चैत्र मास के

कृष्ण पक्ष की त्रियोदशी तिथि के दिन यदि

गङ्गाजी का दर्शन, स्नान प्राप्त होजाँय

तो सौ सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान

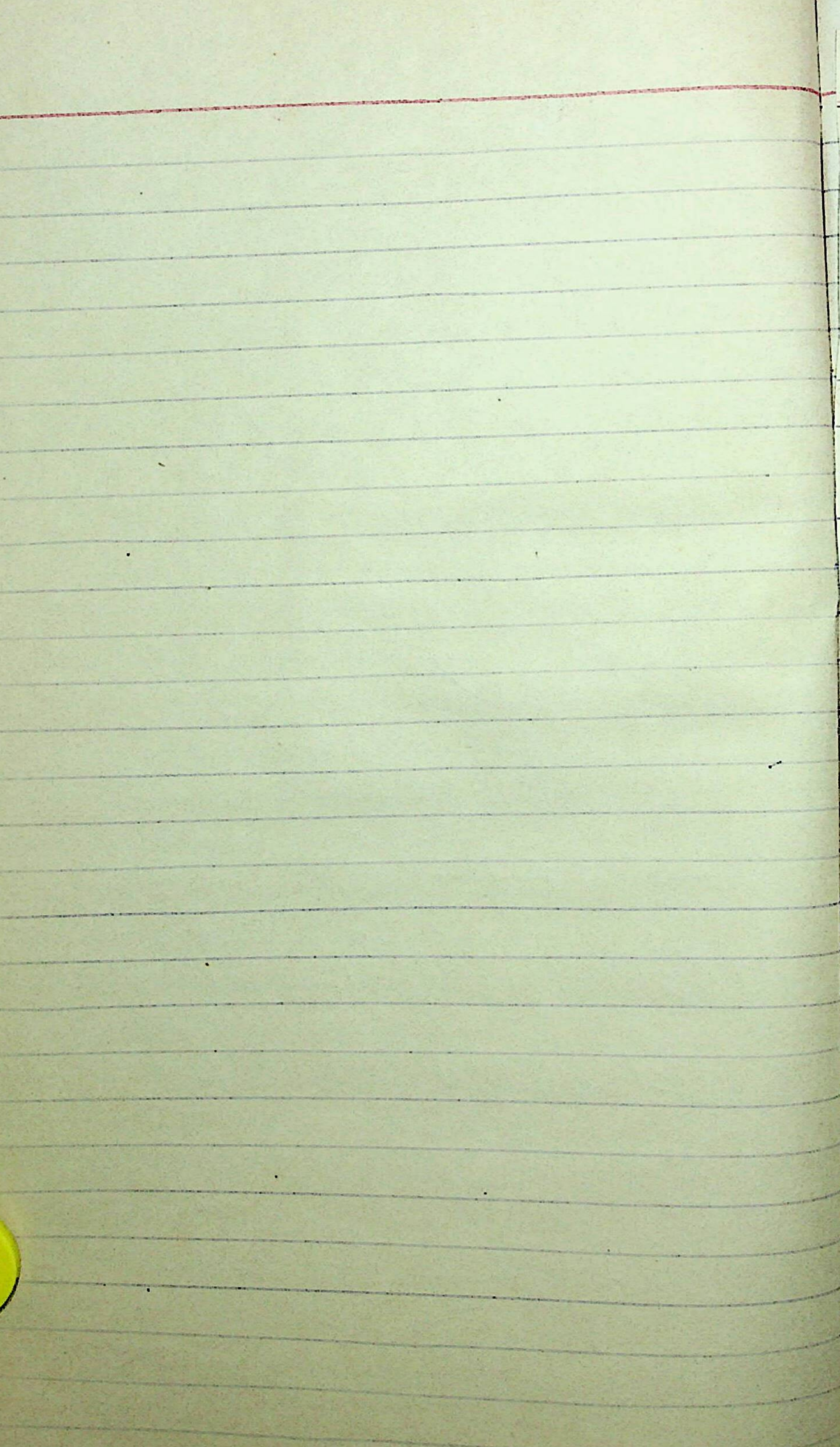
फल प्राप्त होता है। अस्तु, यदि उत्तर वाहिनी

गङ्गा उसमे भी काशी प्राप्त होजाय तो

~~अनेक लक्ष~~ सहस्त्र गङ्गा आदि [illegible] फल प्राप्त होता है।

चैत्र कृष्ण त्रियोदशी तिथि के दिन प्रातः [illegible] बाराणसी प्रदक्षिणा ~~(बड़ी अन्तर्गृही)~~ दर्शन यात्रा

इस दिन वाराणसी यात्रा करने
बावन पुराण [illegible] वेवत है पुराणों में लिखा
वाले मनुष्यों को शरीर निरोगी होता है।



# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

॥ महावारुणी प्रत्व ॥

वारुणी पर्व योगः — वारुणेन समा युक्ता माघी कृष्णा त्रयोदशी गङ्गायां यदि लभ्येत कोटि सूर्य ग्रहैः समा ॥१॥ शनिवार समायुक्ता सा महावारुणी स्मृता । शुभयोग समा युक्ता शनौ शताभिषा यदि । महा महेति विख्याता त्रिकोटि कुलमुद्धरेत् । अत्र गङ्गा स्नानस्यैव फलातिशयः । चैत्र कृष्ण चतुर्दश्यां स्नानं कृत्वा शिव सान्निध्ये न प्रेतत्वमवाप्नोति । गङ्गायां तु विशेषतः इति ।

अर्थ — यदि माघ कृष्ण की त्रयोदशी वारुण योग से युक्त हो और उस दिन कहीं गंगा की प्राप्ति हो जाय तो करोड़ों सूर्य ग्रहण के समान फल की प्राप्ति होती है।

यदि उक्त त्रयोदशी को शनिवार का दिन हो तो वह महावारुणी कही जाती है। शतभिष नक्षत्र से पूर्ण शनिवार हो तो वही महावारुणी महा महावारुणी कही जाती है

अतः गंगा स्नान का फलातिशय है चैत्र कृष्ण चतुर्दशी को यदि शिव के समीप गंगा स्नान करे तो उसे विशेष कर गंगा में प्रेतत्व की प्राप्ति नहीं होती।

महावारुणी पर्व : काशी की वार्षिक यात्रा

"शनिवार समायुक्ता सा महावारुणी स्मृता।

गङ्गायां यदि लभेत कोटि सूर्य ग्रहे: समो॥

अर्थ- महावारुणी शनिवार से युक्त हो तो महावारुणी होती है, चैत्र कृष्ण त्रियोदशी के दिन गङ्गा जी में स्नान प्राप्त हो जावे तो करो-

डों सूर्य ग्रहण में स्नान करने के समान फल प्राप्त होता है।

"शुभयोग समायुक्ता शनौ शत भिषा यदि।

महामहेति विख्याता त्रिकोटि कुल मुद्धरेत्॥

अर्थ- यदि शनिवार शतभिषा नक्षत्र तथा शुभ योग से युक्त हो तो उस दिन वारुणी को महामहा वारुणी कहते है, और महा महा वारुणी के नाम से प्रसिद्ध होती है। इस महा-महावारुणी पर्व में गङ्गा आदि नदियों में स्नान, संध्या, देव ऋषि, पितरो को तर्पण, अन्न आदि दान करने से तीन करोड़ का कुल का उद्धार महावारुणी करती है।

काशी की ~~सा~~धार्मिक दर्शन यात्रा।

~~माधव मासे~~ महावारुणी महा पर्व

मधौ कृष्ण त्रयोदश्यां शनौ शताभिषायुता।
वारुणीति समाख्याता शुभेतु महती स्मृता॥

[ब्रह्म पुराणे (कल्पतरु) में भी इसी प्रकार वर्णन किया है]

अर्थ - शनिवार तथा शताभिषा नक्षत्र से युक्त चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की त्रयो-

दशी तिथि हो तो उसे वारुणी नाम से कहा जाता है, वही शुभ योग से युक्त

होने पर महा वारुणी हो जाती है।

चैत्र कृष्ण त्रियोदशी तिथि के दिन वारुणी या महा महावारुणी पर्व ~~के~~

के दिन काशी के महातीर्थ

अस्सी घाट, केदार घाट, दशाश्वमेध घाट, मीरविश्वनाथ घाट, मणिकर्णि

का घाट, पञ्च गङ्गा घाट, त्रिलोचन घाट वरुणा संगम आदि केशव घाट आदि

महावारुणी के दिन काशी से बाहर गङ्गा जी में स्नान करने से जो फल मिलता है उस से दश हजार गुणा अधिक काशी के गङ्गा जी में स्नान करने वाले को फल प्राप्त होता है।

३

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

साधु संन्यासी ~~ब्राह्मण~~ ब्राह्मण ~~...~~ को यथा शक्ती भोजन करानेसे धन ~~...~~ वान लक्ष्मीवान होता है। और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ~~...~~ तिथि के दिनसे गौरी नव रात्रि प्रारम्भ। इस नव रात्रमें भी दुर्गा सप्तशती, देवी भागवत, रामायण और गीता, श्रीमद् भागवत आदि का पाठ ~~है~~ उपनिषद आदि के पाठ होते है। बडे बडे महा यज्ञ होते है।

काश्यां संन्यावच्या साचतच्चणु ब्ववदा।

नवरात्रं प्रयत्नेन व्रतमहं सासमाचीर्तता। मिते।
नाशयिष्याति विघ्नौघान्सुमति च प्रदा स्याति ।। ८३ ।।

[काशी खण्ड अध्याय ७२] ~~में~~

अर्थ - जिस प्रकार काशी संस्था है उसे सुनो मैं तुमको कहता हूँ। नवरात्र मैं प्रयत्न पूर्वक प्रति दिन उनकी पूजा करनी चाहिए, ऐसे करने से समस्त कार्य सिद्धियों का विनाश होगी और सुमति प्रदान होगी।

॥

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र शुक्ल प्रति पदा तिथी के दिन

शैल पुत्री वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

शैल पुत्री देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

मुहल्ला —— शैल पुत्री]

शैल पुत्री दर्शनार्थियों का

ताता लगा रहता है, और मेला लगता है

लाखो यात्री दर्शन करते है। तिथि

चैत्र शुक्ल प्रति पदा के दिन

मुख निर्मालिका गौरी वार्षिक दर्शन

यात्रा होती है। वर्तमान काल

में दर्शनार्थी नव गौरी, नवदुर्गा

की प्रति दिन प्रति पदा से नवमी

तिथी तक दो २ देवी के दर्शन करते है।

चैत्र शुक्ल प्रति पदा तिथी से नवमी

तिथि तक वार्षिक दर्शन यात्रायें दुर्गा देव्यै नमः

[मन्दिर नम्बर बी० २७/२ में मुहल्ला दुर्गाकुण्ड]

चैत्र शुक्ल तृतीया तिथी के दिन प्रातः

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्रशुक्लतृतीयायां पार्वतीशसमर्चनात् ॥ ४२ ॥
इह सौभाग्यमाप्नोति परत्र च शुभां गतिम् ।
पार्वतीश्वरमाराध्य योषिद्वा पुरुषोऽपि वा ॥ ४३ ॥
न गर्भमाविशेद् भूयो भवेत्सौभाग्यभाजनम् ॥ ४४ ॥
(काशी खण्ड अ० ७०)

अर्थ:- चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन पार्वतीश्वर का पूजन करने पर इस लोक में सौभाग्य को प्राप्त करता है, तथा परलोक में शुभ गति को प्राप्त करता है। स्त्री अथवा पुरुष जो कोई भी पार्वतीश्वर महादेव की आराधना करता है, उसको फिर गर्भ में नहीं आना पड़ता है। तथा वर्तमान काल में सौभाग्य का पात्र हो जाता है।

चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया तिथी के दिन विशालाक्षी गौरी वार्षिक दर्शन यात्रा करें।
विशालाक्षी गौरी देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी० ३/८८ में मु० धर्मकूप मीरघाट ~~विश्वनाथ~~]
चैत्र शुक्ल तृतीया तिथी के दिन विश्वभुजा गौरी वार्षिक दर्शन यात्रा
विश्वभुजा गौरी देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी० २/१३ में मु० धर्मकूप मीरघाट

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि के दिन भवानी गौरी वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

भवानी गौरी देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी॰ ८/२८ में मु॰ अन्नपूर्णगली]

चैत्र शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन छप्पन विनायक वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

चैत्र शुक्ल सप्तमी तिथि के दिन नव-गौरी नव दुर्गा वार्षिक दर्शन यात्रा करें। इस यात्रा में पहले पाँच सौ लग-भग यात्री हमारे साथ यात्रा करते थे। आज भी ~~दो सौ यात्री यात्रा करते है~~।

चैत्र शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन ~~भी दो सौ~~ भवानी-अन्न पूर्णा वार्षिक दर्शन परिक्रमा ~~परीक्रमा~~ यात्रा करें [काली खण्ड में अन्न पूर्णा जी को भवानी के नाम से छोड़े ~~यह स्कन्द पुराण का ...~~]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन सुभद्रा देवी वार्षिक दर्शन, पूजन, यात्रा करें। सिद्धेश्वरी के सामने है। सुभद्रा देव्यै नमः [मन्दिर मकान नम्बर सी०के० ७/१२४ में मु० सिद्धेश्वरी]

चैत्र शुक्ल रामनवमी तिथि के दिन प्रातः रामतीर्थ रामघाट में स्नान करके वीर रामेश्वर का वार्षिक दर्शन-यात्रा करें।

ततस्तु रामतीर्थञ्च वीररामेश्वराग्रतः।
तत्तीर्थस्नानमात्रेण वैष्णवं लोकमाप्नुयात्॥७०॥
[काशी खण्ड अध्याय ८४]

**अर्थ**, उसके बाद स्वयं वीर रामेश्वर के आगे रामतीर्थ है, उस तीर्थ में स्नान मात्र से व्यक्ति वैष्णव लोक को प्राप्त करता है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चैत्र शुक्ल रामनवमी तिथि के दिन

वीर रामेश्वर वार्षिक दर्शन, पूजन

यात्रा। ॐ १ वीररामेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर सी०के० मुहल्ला राम घाट]

2 रघुनाथेश्वरायनमः [मानमन्दिर घाट]

3 अयोध्यारामेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर मुहल्ला हनुमान घाट]

4 वसिष्ठ रामेश्वरायनमः [मकान नम्बर मुहल्ला रामकुण्ड कुलेकरा रोड]

चैत्र शुक्ल एकादशी तिथि के दिन

बिन्दु तीर्थ में पञ्चगङ्गा घाट में स्नान कर विन्दु

माधव के वार्षिक दर्शन यात्रा करें।

विन्दु माधवाय नमः [मन्दिर नम्बर

के० 22/33 में मुहल्ला पञ्चगङ्गा]

चैत्र शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन शनि प्रदोश-

जब शनिवार पड़ता हो उस दिन कामेश्वर के

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

प्रयत्न पूर्वक वार्षिक दर्शन-पूजन यात्रा करनी चाहिए। चूँकि स्त्री-पुरुष के स्पर्श स्पर्शा काम जनित पाप नष्ट होते है। कामेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर ए. 3 4/11 में मुहल्ला मच्छोदरी पार्क के पूर्व बगल कामेश्वर गली में ]

चैत्र शुक्लत्रयोदश्यां तत्र यात्रा च कामद ।। (काशीखण्ड अ.

अर्थ –

चैत्र शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन पशुपति तीर्थ मणि कर्णिका घाट में स्नान करके पशुपतिश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

चन्द्रेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर, नम्बर सी. के. ७/१२४ में मुहल्ला सिद्धेश्वरी]

अत्र यात्रा महाचैत्र्यां कार्या क्षेत्रनिवासिभिः ।
तारकज्ञानलाभाय क्षेत्रविघ्ननिवर्तिनी ॥६१॥

चन्द्रेश्वरं समभ्यर्च्य यद्यन्यत्रापि संस्थितः ।
अमोघपदवीं भित्त्वा सोमलोकमवाप्स्यति ॥६२॥
अघौघ
सिद्धयोगीश्वरं पीठमेतत्साधकसिद्धिदम् ।

[काशी खण्ड अध्याय ॥१४॥]

**अर्थ-** क्षेत्रवासियों का परम कर्तव्य है कि यहाँ की महाचैत्र में यात्रा करें, यह यात्रा तारक मंत्र के लाभ के लिए तथा क्षेत्र के विघ्नों के नाश के लिए होती है।

चन्द्रेश्वर की पूजा करके यदि अन्यत्र भी निवास करे तो वह पाप समूहों को भेदन कर सोमलोक को प्राप्त करेगा। यह सिद्ध योगीश्वर पीठ साधकों को सिद्धिप्रद है।

## " बैसाख मास प्रारम्भ "

बैसाख ~~बर~~ पवित्र महीना पापों को नाश करनेवाला पुण्य को वृद्ध करने वाला है नियम पूर्वक गङ्गा स्नान व पद्मोव्रत फलाहार आदि अनुष्ठान गायत्री जप एवं पञ्चाक्षरी महामन्त्र का अनुष्ठान आदि आदि करें।

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

वैसाख कृष्ण प्रति पदा तिथि के दिन प्रातः

एकतीर्थी यात्रा स्नान, दर्शन वार्षिक यात्रा करें। मणिकर्णिका घाट में स्नान कर विश्वनाथ जी का दर्शन करें। विश्वनाथ मन्दिर

[मं० नम्बर सी.के. ३५/१९ में है।

मुहल्ला अन्न पूर्णा गली]

यात्रा द्वयं प्रयत्नेन कर्तव्यं प्रतिवासरम्
आदौ स्वर्गतरङ्गिण्यास्ततो विश्वेशितुर्ध्रुवम्
[काशीखण्ड अध्याय १०० श्लोक १-२

काश्यां तीर्थान्यनेकानि काश्यां लिङ्गान्यनेकशः।
तथापि सेव्यो विश्वेशः स्नातव्या मणिकर्णिका ॥५॥ १०४

सर्वतीर्थेषु सस्नौ स सर्वयात्रां च धात्स च। २
मणिकर्ण्यां तु यः स्नातो यो विश्वेशं निरैक्षत। [काशीखण्ड अ०

अर्थ — प्रतिदिन प्रयास पूर्वक दो यात्रा करनी चाहिए प्रथम गंगा की उसके बाद विश्वेश्वर की।

काशी में अनेक तीर्थ हैं तथा अनेक लिङ्ग हैं तो भी विश्वेश्वर की पूजा करो और मणिकर्णिका में स्नान करो।

भले ही सभी तीर्थों में स्नान करो और सभी की यात्रा करे किन्तु जो मणिकर्णिका में स्नान करता है तथा विश्वेश्वर का दर्शन करता है (वह अतिशय पुण्य का भागी होता है)

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं पुनः पुनः।
द्रष्टव्यो विश्वेश्वरो नित्यं स्नातव्या मणिकर्णिका ॥५॥
[काशीखण्ड अध्याय १००]

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं पूर्वमिदं वचः।
मणिकर्णी समं तीर्थं नास्ति ब्रह्माण्डगोलके ॥११३॥
[काशीखण्ड अध्याय ८४]

"प्रातः पञ्चनदे स्नात्वा मध्याह्ने मणिकर्णिकाम्।]
[काशीखण्ड अ० ८४]

यह बार-२ ध्रुव सत्य है कि विश्वनाथ का दर्शन करें और मणिकर्णिका में स्नान करें।

यह बार-बार ध्रुव सत्य है कि मणिकर्णिका के समान इस ब्रह्माण्ड में कोई तीर्थ नहीं है।

~~प्रात~~ प्रातः काल पञ्चगंगा में स्नान करें और मध्याह्न में मणिकर्णिका में स्नान करें।

तथा पूजा पाठ प्रति दिन ~~दान~~ यथाशक्ति दान करते हुए हर निशाशन - शिवमन्त्र जपते है।
वैसाख कृष्ण प्रतिपदा तिथि के
दिन एक तिर्थी स्नान दर्शन वार्षिक
यात्रा करें वैसाख कृष्ण ~~पक्ष~~ द्वितीया
तिथि के दिन द्वितीर्थी स्नान दर्शन
यात्रा करें वैसाख कृष्ण द्वितीया
तिथि के दिन लक्ष्मी कुण्ड स्थित
सीता देवी जी की पञ्चक्रोशी
दर्शन, पूजन एवं पाप - दरिद्रता,
संकटनाशक वार्षिक यात्रा
सीता देवी सबको प्रेरणा करके
नगर भगाने दो सो यात्रीयों को
साथ में लेकर पञ्चक्रोशी यात्रा
जाती है। प्रेरणा करके यात्रा
कराने वाले को ~~प्यार~~ दशांश ~~प्राप्त~~
फल प्राप्त होता है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

बैसाख कृष्ण पक्ष प्रति पदा तीथि के दिन से बैसाख भर त्रिलोचन घाट में और पिल पिला तीर्थ में स्नान करके त्रिलोचनेश्वर का दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा को बैशाख भर जहाँ कहीं भी रहे वहीं पर स्नान, दान व्रत, यज्ञ, जप तथा पूजा पाठ आदि अनुष्ठान यह सब साधन जन्म जन्मान्तर के पाप को नाश करने वाला और अपना कल्याण करने वाला है।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

त्रिलोचनेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर ए० 2/80 मे है मुहल्ला त्रिलोचन घाट] वैशाख कृष्ण तृतीया तिथि दिन प्रातः एकादश महारुद्र शिव दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें वैसाख कृष्ण तृतीया तिथि के दिन त्रितीर्थी स्नान, दर्शन वार्षिक यात्रा करे।

काश्यां तीर्थत्रयी श्रेष्ठा नित्यं सेव्या प्रयत्नतः।
आदौ स्नात्वा प्रयागे तु पञ्चगङ्गा ततः परम्॥
ततः पुष्करतीर्थे स्नात्वा मुच्येत बन्धनात्।
[लिङ्गपुराणे]

**अर्थ-** काशी में श्रेष्ठ तीन तीर्थ हैं जिनकी सेवा प्रयास पूर्वक करनी चाहिए। प्रथम प्रयागघाट में स्नान तदनन्तर पंचगंगा में स्नान बाद में पुष्कर तीर्थ में स्नान करके व्यक्ति सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

# ॥ काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

~~वैसाख कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन छब्बिस~~ छब्बिस
~~गणेश~~ दर्शन - पूजन वार्षिक यात्रा।
करें।

वैसाख कृष्ण चतुर्थी तिथि के दिन
प्रातः चतुर्थी स्नान-दर्शन
वार्षिक यात्रा करें।

"प्रण्ये पिलपिलानाम्नी त्रिसरित्परि-
सेविते $\frac{८६}{२}$
स्नात्वा गृह्योक्त विधिनात तर्पणीयान्प्रत-
र्प्यंच $\frac{५८}{१}$
ततः पञ्चनदे स्नात्वा । मणिकर्णिहृदे ततः।
ततो ज्ञानोदवाप्यान्तु स्नात्वा विश्वेश-
मर्चयेत् ।
प्रायश्चित्तमिदं प्रोक्तं महापाप विशोधनम्
[काशी खण्ड अध्याय ६५ ॥ श्लोक ५५ ]

पिलपिला नामके तीन नदियों का सेवन करने पर पुण्य की प्राप्ति होती है। गृह्योक्त विधि से स्नान करके तर्पणीय लोगों का तर्पण करें।

बाद में पंचगंगा में स्नान करके मणिकर्णिका कुण्ड में स्नान करें फिर ज्ञानवापी स्रोत में स्नान करके विश्वनाथ की पूजा करें तो सभी पापों की शुद्धि के लिए यही प्रायश्चित कहा गया है।

काशीवार्षिक यात्रामें ४ चौथा
कार्य प्रारम्भ।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा।

वैसाख कृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन प्रातः पञ्चगंगा में स्नान, दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

प्रथमञ्चासिसम्भेदं तीर्थानाम प्रवरम्परम् ।
ततो दशाश्वमेधाख्यं सर्वतीर्थ निषेवितम् ।।१०८

ततः पादोदकं तीर्थमादिकेशव सन्निधौ ।
ततः पञ्चनदम्प्राप्यं स्नानमात्राद् घौघ-
हृत ।।१०९ ।।

एतेषामपि तीर्थानां चतुर्णामपि सत्तम ! ।
पञ्चमं मणिकर्णाख्यं मनोवचवशुद्धिदम ॥
।। ११० ।।

पञ्चतीर्थ्यां नरः स्नात्वा न देहम्पाञ्च भौतिकम् ।
गृह्णाति जातुचीत्काश्यां पंचास्योवाऽथ
जायते ।। ११४ ।।

**अर्थ -** सभी तीर्थों में असि संगम श्रेष्ठ है तदनन्तर सभी तीर्थों से सेवित दशाश्वमेध है। बाद में आदिकेशव के समीप पादोदक तीर्थ है। इन सभी चारों तीर्थों के बाद मन और तदन्तर इन्द्रियों को शुद्ध करने के लिए पञ्चम मणिकर्णिका नामक तीर्थ है।

## काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

वैसाख कृष्ण षष्ठि तिथि के दिन प्रातः काशी में षट्तीर्थी स्नान दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

पादोदकासिसम्भेदज्ञानोदमणिकर्णिकाः।
षडङ्गोऽयं महायोगो ब्रह्मधर्महृदावपि॥६४॥

षडङ्गसेवनादस्माद्वाराणस्यां नरोत्तम।
न जातु जायते जन्तुर्जननीजठरे पुनः॥६५॥

**अर्थ** — पादोदक, असीसङ्गम, ज्ञानवापी, मणिकर्णिका, ब्रह्मसरोवर तथा धर्मसरोवर ये छहों षडङ्ग योग हैं। हे नरोत्तम! इस वाराणसी में षडङ्गों के सेवन से मनुष्य पुनः मातृगर्भ में नहीं आता।

वैसाख कृष्ण सप्तमी तिथि के दिन प्रातः सप्ततीर्थी स्नान-दर्शन वार्षिक यात्रा

यह सप्त तीर्थी यात्रा शिवरहस्य के आज्ञानुसार रखा गया है। सप्त तीर्थी यात्रा उत्तर में रहने वाले यात्री वरुणा संगम से प्रारम्भ करें। दक्षिण में रहने वाले यात्री

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

असी संगम से प्रारम्भ करें। बैसाख कृष्णा अष्टमी तिथि के दिन प्रातः पञ्चमुद्रा देवी दर्शन, पूजन ~~का~~ बार्षिक यात्रा। यह ~~[struck]~~ पञ्चमुद्रा देवी नन्दी उप-पुराण के आज्ञानुसार है। ~~काशी~~ स्कन्द पुराण में भी इसी प्रकार बर्णन आया है पञ्चमुद्रा देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर के० 24/34 में है मु० मंगला गौरी]
मंगला गौरी के सामने ~~प~~ पञ्चमुद्रा देवी पश्चिमाभिमुख है। बैसाख कृष्णा अष्टमी तिथि के दिन काशी में दश-महाविद्या दर्शन, पूजन बार्षिक यात्रा करें।
बैसाख कृष्णा दशमी तिथि के दिन दशहरेश्वर, दर्शन, पूजन बार्षिक यात्रा करें।
(दशाश्वमेध घाट सीतला देवी जी के मन्दिर में है।)

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

बैसाख कृष्ण त्रियोदशी तीथि के दिन अष्ट बसु अष्ट महा शिव लिङ्ग दर्शन, पूजन बार्षिक यात्रा करें। बैसाख कृष्ण चतुर्दशी तीथि के दिन त्रिलोचनेश्वर एवं निस्कुम्भेश्वर दर्शन यात्रा करें। बैसाख कृष्ण बार्षिक चतुर्दसी तीथी के दिन त्रिसंध्येश्वर दर्शन, पूजन बार्षिक यात्रा करें। त्रिसन्ध्येश्वरायनमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर डी० १/४० में है मुहल्ला ललिता घाट] बैसाख कृष्ण त्रियोंदशी तीथि के दिन अगस्तीश्वर दर्शन पूजन बार्षिक यात्रा करें। अगस्तीश्वरायनमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी० ३६/११ मुहल्ला ~~[illegible]~~ अगस्तकुण्डा] वैसाख ~~कृष्ण त्रियों~~ ~~[illegible] तीथि के दिन~~

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन आशा बार्षिक दर्शन यात्रा करें। बैसाख कृष्ण अमावस्या तिथि के दिन प्रातः यथा शक्ति - जूता - छाता - पंखा तथा अन्न, बस्त्र, द्रव्य और जल आदि दान करके एक से ब्राह्मण, संन्यासी साधु, महात्मा को भोजन कराना चाहिये।

बैसाख शुक्ल द्वितीया के दिन जागेश्वर दर्शन बार्षिक यात्रा करें। जागेश्वराय नमः मन्दिर भम्भर — मु. नरहरि पुरा

(नोट जो नर नारि सत-पात्रों को अन्न बस्त्र, द्रव्य आदि दान देते है, उनके पुत्र पौत्र प्रपौत्रों को अनन्त-गुणा होकर प्राप्त होता है। जो आज धनी और सुखी दिखने में आते है, उनों ने पूर्व जन्म में सत्कर्म, यज्ञ, दान तपस्या एवं स्वधर्म का पालन किया है।]

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

बैसाख शुक्ल अक्षयतृतीयातीथि के दिन मनुष्य जो भी सुभ कर्म करता है वह अक्षय होजाता है। और साथही आयु, धन एवं परिवार की वृद्धि होती है। बैसाख अक्षय तृतीया तिथि के दिन त्रिलोचन घाट में स्नान करने के पश्चात पिलपिलातीर्थ में स्नान करके त्रिलोचनेश्वर का दर्शन, पूजन कर वार्षिक यात्रा करें।

त्रिलोचनेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर मु० त्रिलोचनघाट]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

शुक्लराधातृतीयायां स्नात्वा पैङ्गिपिङ्गिह्रदे ।
उपोषणपरा भक्त्याऽरात्रौजागरणान्विता ॥१८

चैत्रे पिङ्गिपिङ्गातीर्थे स्नात्वोत्तरवहाम्भसि

सरित्त्रयं महापुण्यं यत्र साक्षाद्धूर्जटिः सदा ।
॥१९॥

तत्स्यात्त्रिविष्टपे दृष्टे काश्यां मन्ये ततोधिकम्

दृष्ट्वा त्रिविष्टपं लिङ्गं ~~कल्पाक~~ कोटितीर्थ फलं लभेत् ।

यदन्यत्रार्जितं पापं तत्काशी दर्शनाद् व्रजेत् ॥२१॥

[काशीखण्ड अध्याय ८५]

अर्थ — शुक्ल पक्ष के वैशाख तृतीया तिथि में पिङ्गलपिङ्गल सरोवर में स्नान करके भक्तिपूर्वक रात्रि में जागरण और उपवास करें।

जो पिङ्गलपिङ्गल तीर्थ में उत्तर वाहिनी गंगाजल में स्नान करके प्राणी तीनों नदियों के पुण्य को प्राप्त करता है जहां साक्षात् शिव निवास करते हैं।

स्वर्ग के अवलोकन होने पर काशी में उससे भी अधिक फल प्राप्त होता है। त्रिविष्टप लिङ्ग के दर्शन करके लोग करोड़ों तीर्थों के फल को पा जाता है।

अन्यत्र अर्जित किया हुआ पाप काशी के दर्शन मात्र से नष्ट हो जाता है।

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

त्रिलोचनस्य ये भक्तास्ते ऽपि सर्वे त्रिलोचनाः।
मम पारिषदास्ते तु जीवन्मुक्तास्तस्य वै हि ॥
॥६५॥
त्रिलोचनस्य लिङ्गस्य महिमानं न कश्चन।
सम्यग्वेत्ति महेशानि! मयैव परिगोपितम् ॥
॥६६॥
त्रिलोचनं पूजयित्वा प्रातः स्नात्वा पितॄंश्च वै।
पुनर्लिङ्गं समभ्यर्च्य दत्त्वा धर्मघटानपि ॥
[काशीखण्ड अ. ७५ ॥६८॥ ]

अर्थ - त्रिलोचन के जो भक्त हैं वे सभी त्रिलोचन अर्थात् भगवान शंकर के रूप हैं। वे सभी जीवन्मुक्त लोग मेरे पार्षद हैं।

हे पार्वती! त्रिलोचन की महिमा को कोई पूर्णरूप से नहीं जानता चूंकि इसका गोपन मैंने ही किया है।

प्रातःकाल वहाँ स्नान करके तथा त्रिलोचन की पूजा करके पुनः पूजन करके तथा धर्मघट का दान करके

काशी की वार्षिक यात्रा

बैसाख शुक्ल अक्षय तृतीया तिथि के दिन प्रातः पञ्चतीर्थी स्नान, दर्शन वार्षिक यात्रा करें। काशी में और काशी से (स्त्री पुरुष सम्बन्धी) बाहर स्पर्श इन्द्रियों द्वारा किये गये पाप इस यात्रा से नष्ट होते है, पहले लग भग एक हजार यात्री यात्रा में जाते थे। इस समय में भी ५ सौ यात्री यात्रा करते है यह यात्रा पाँच घण्टा में पूर्ण होता है। बैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया तिथि के दिन परसुराम जयन्ती है, उसी दिन परसुरामेश्वर तीर्थ मणिकर्णिका घाट में स्नान करके परशुरामेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। परशुरामेश्वराय नमः

मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर सी.के. में है मुहल्ला

नन्दन साहू लेन ]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ततः परशुरामस्य तीर्थं चातीव सिद्धिदम्।
यत्र क्षत्रवधात् पापाज्जामदग्न्यो विमुक्तिवान् ॥८५॥

अद्याऽपि क्षत्रवधजं पापं तत्र प्रणश्यति।
एकेन स्नानमात्रेण ज्ञानाज्ञानकृतेन च।
॥८६॥

[काशी खण्ड अध्याय ८३]

अर्थ- बाद में परशुरामतीर्थ अतीव सिद्धिप्रद है। जहाँ पर क्षत्रियवध जनित पाप से परशुराम जी मुक्त हुए थे। आज भी क्षत्रिय-वध जनित पाप यहाँ नष्ट हो जाते हैं किन्तु ज्ञानपूर्वक एक बार यहाँ स्नान करना चाहिए।

बैसाख शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन साक्षी विनायक दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। साक्षी विनायकाय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी० १०/८ में है। साक्षी विनायक तिरमुहानी गली]

# काशी की धार्मिक दर्शन यात्रा

बैसाख शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन मणिकर्णिका घाट में लगा, भग बार बजे, सर्व पाप नाशिनी महायोग आता है पहले से ही पञ्चाङ्ग देख कर प्रयत्न पूर्वक स्नान, दर्शन यात्रा करना चाहिये। बैसाख शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन प्रातः द्वार विनायक दर्शन, पूजन बाह्यों के यात्रा करें। द्वाराविनायकाय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर सी. के. ३५/२७ में हैं हल्ला अन्नपूर्णा गली पञ्च मुखी गणेश जी के नाम से प्रसिद्ध हैं ~~जाने जाते है~~। बैशाख शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन जगत गुरु आदि शंकराचार्य जी का जन्म तिथि जयन्ती का दिन है बड़े उत्साह के साथ जयन्ती मनाना चाहिये। बैशाख शुक्ल

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

पञ्चमी तिथि के दिन प्रात तिलपर्णे श्वर दर्शन ~~यात्रा~~ पूजन वार्षिक यात्रा करें। तिलपर्णे श्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर बी॰ मैं है मु॰ हल्ला दुर्गाकुण्ड दुर्गा जी के फाटक के दक्षिण बगल में है।

बैसाख शुक्ल गङ्गा सप्तमी तिथि के दिन गङ्गोतरी से गङ्गा सागर तक ~~बंगाल के खाड़ी तक~~ गङ्गा जी की जयन्ती के दिन प्रातः गङ्गा स्नान करके गङ्गेश्वर के दर्शन करनी चाहिए। स्कन्द पुराण में बेदब्यास जी लिखते है स्नान दर्शन करने वाले ~~उन~~ के पाप नष्ट करते है अपने दर्शन करने वाले भक्तों को धन. ऐश्वर्य. सुख देते है। गङ्गेश्वर के काशी में चार मन्दिर प्रसिद्ध है। गङ्गेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी॰ मैं है मुहल्ला प्रयागराज घाट में ऊपर लाल मन्दिर में है। जिसमें प्रयागघाट लिखा है। वही गङ्गेश्वर है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

मणिकर्णिका गङ्गेश्वरायनमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर मुहल्ला मणि कर्णिका घाट में चरण पादुका के दक्षिण बगल के सब से बड़े शिवालये में गङ्गेश्वर है।

पञ्च गङ्गेश्वरायनमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर मुहल्ला तैलङ्ग स्वामीजी के आश्रम में ~~पञ्चगङ्गा~~ पञ्च गङ्गा घाट है] चौथे गङ्गेश्वर ज्ञानवापी में है। वैसाख ~~शुक्ल~~ अष्टमी तिथि के दिन राज राजेश्वरी देवी दर्शन वार्षिक यात्रा करें। राजराजेश्वरी देव्यैनमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर डी॰ मुहल्ला राजराजेश्वरी मठ त्रिलोचन घाट। वैसाख शुक्ल एकादशी तिथि के दिन

~~दार~~ विषण्ठवेनमः [मन्दिर मकान नम्बर 35) 9 मैं है मुहल्ला ऊर्ज पूर्ण) वैसाख [illegible]
गली विश्व(?)... जी के घर के अन्दर है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा
शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन
प्रातः पुत्र, पौत्र और धन की प्राप्ती
के लिये केदार घाट में स्नान करके
केदारेश्वर दर्शन पूजन वार्षिक
यात्रा करें। केदारेश्वराय नमः
[मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर बी० ६)१०२ में मुहल्ला
केदार घाट] बैसाख शुक्ल चतुर्दशी
तिथि के दिन त्रिलोचन घाट में
स्नान करके ओंकारेश्वर दर्शन
वार्षिक यात्रा मोक्ष प्राप्ती के लिए
प्रयत्न पूर्वक दर्शन करें।
ओंकारेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर
ए० ३३/२३ में मुहल्ला मच्छोदरी
छितवन पुरा]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

राधाशुक्ल चतुर्दश्यामद्यापि क्षेत्रवासिनः ।
तत्र यात्रां प्रकुर्वन्ति महोत्सव पुरःसराः ॥

तत्र जागरणं कृत्वा चतुर्दश्या मुपोषिताः ।
प्राप्नुवन्ति परंज्ञानं यत्र कुत्रापि वै मृताः ॥
॥६६॥

ब्रह्माण्डोदर मध्येतु यानि तीर्थानि सर्वतः ।
तानि वैसाख भूतायामायान्त्योङ्कार दर्शने ॥
[काशी खण्ड ॥१००॥ ]

अर्थ - आज भी क्षेत्रवासी लोग राधा शुक्ल चतुर्दशी तिथि में यहाँ बड़े ही उत्साह के साथ यात्रा करते हैं।
चतुर्दशी तिथि में उपवास तथा जागरण करके जहाँ कहीं भी मरे उन्हें परम ज्ञान की प्राप्ति होती है।
इस ब्रह्माण्ड के भीतर जितने तीर्थ हैं वे सभी वैशाख में ओंकारेश्वर तीर्थ में आते हैं।

→

वैसाख शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन नव ग्रह दर्शन, पूजन यात्रा ग्रहों की शान्ती के लिये प्रयत्न पूर्वक दर्शन यात्रा करें।

कूर्म पुराण के ब्राह्मी संहिता के अ० ३१ में

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

और शिव पुराण, लिङ्ग पुराण में भी ओंकारेश्वर का इसी प्रकार वर्णन है। ]

वैशाख शुक्ल चतुर्दसी तिथि के दिन प्रह्लाद घाट के ऊपर प्रह्लाद नृसिंह विष्णु दर्शन यात्रा (काशीवास में आने वाले विघ्न, संकट, कष्ट दूर होते है। प्रह्लादनृसिंह विष्णवे नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर          मुहल्ला प्रह्लादघाट] ~~के ऊपर~~

विदारनरसिंहोऽहं काशीविघ्नविदारणः।
तन्नाम्नितीर्थे संसेव्यस्तीर्थोपद्रवशान्तये॥
[काशीखण्ड अध्याय-६१, श्लोक-१८ ]

अर्थ— काशी के विघ्नों को विदीर्ण करने वाला मैं विदारनारसिंह हूँ। तीर्थ के उपद्रव की शान्ति के लिये विदारनारसिंह नामक तीर्थ की सेवा करनी चाहिए।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

बैसाख शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन प्रातः प्रह्लाद केशव दर्शन यात्रा करें। प्रह्लादकेशवाय नमः

[मन्दिर नम्बर ए० १/८० मैं मुहल्ला प्रह्लाद घाट प्रह्लादेश्वर के बगल में]

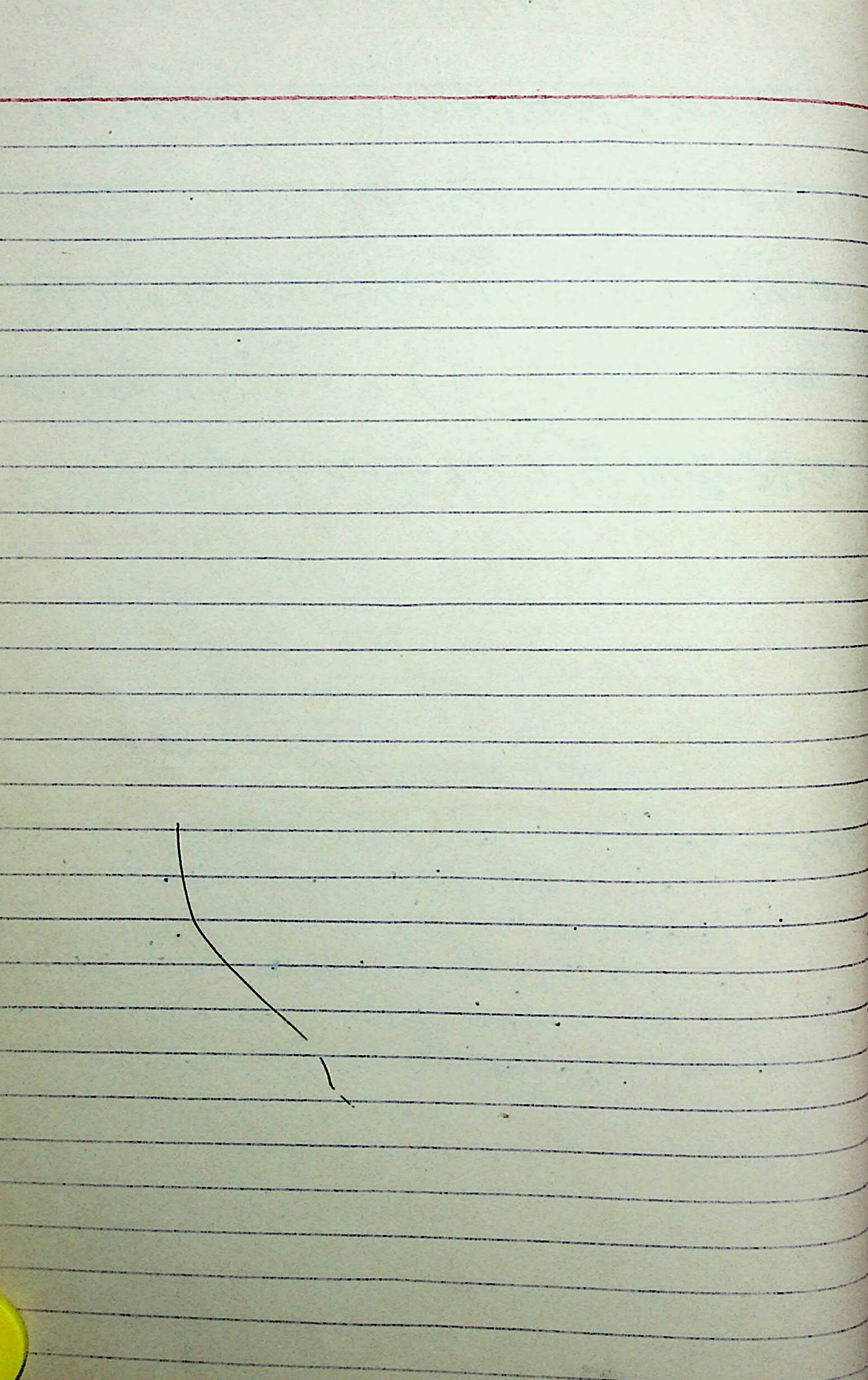
प्रह्लादतीर्थे तत्रैव नाम्ना प्रह्लादकेशवः।
भक्तैः समर्चनीयोऽहं महाभक्ति समृद्धये ॥११॥

महाबलनृसिंहोऽहं ओंकारात् पूर्वतो मुने।
दृग्गोचरं महाबलं नाम्यान्न पश्येत तदर्चकः ॥

[काशीखण्ड अध्याय ६१ श्लोक ]

अर्थ — वहीं पर प्रह्लाद केशव नामक प्रह्लाद तीर्थ है भक्तों के द्वारा महाभक्ति की पूर्ति के लिये मैं सतत पूजनीय हूं।

हे मुने! ॐकारेश्वर के पूर्व में महाबल नृसिंह हूं। मेरे अर्चना करने वाले लोग यम के महाबली दूतों को नहीं देखते।



काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

वैसाख शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन अङ्गीरसेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। इन के दर्शन करने से ऋषि एवं पितर प्रसन्न होते है।

अङ्गीरसेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर ~~डी० २५ [illegible]~~ में है मुहल्ला मध्यमेश्वर]

बैसाख शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन प्रातः स्नान यथा शक्ति अन्न सीधा वस्त्र, औषधि इत्यादि दान, साधु संन्यासी, ब्राह्मण भोजन आदि से बैसाख मास विसर्जन होता है।

बैसाख शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन धूर्वेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

धूर्वेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी० ४८/१० में है मुहल्ला सनातन ~~ईश्वर~~ इन्टर कालेज नई सड़क]

"ज्येष्ठमास प्रारम्भ" का० वार्षिकयात्रा

जेष्ठमास भर "जेष्ठयात्रा -

-पदा तिथी के दिन से दशाश्वमेध घाट में स्नान करके शूलटङ्केश्वर गङ्गेश्वर, बाराहेश्वर एवं बन्दिदेवी, प्रयागेश्वर, प्रयाग माधव और सीतला देवी - बागेश्वर, श्वर तथा दशाश्वमेधेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। दशाश्वमेधेश्वरायनमः (मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी० १८) १८ मैं मैं महल्ला प्रयागराज घाट।

ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे प्राप्य प्रति पदं तिथिम्।

दशाश्वमेधिके स्नात्वा मुच्यते जन्म पातकैः ॥८॥

काशीखण्ड अ०

अर्थ- ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष के प्रतिपद तिथि को प्राप्त दशाश्वमेध में स्नान करने से इस जन्म के पापों से व्यक्ति मुक्त हो जाता है

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया तिथि के दिन बैजनाथेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। इन के दर्शन पूजन से रोग शान्त होते है। बैजनाथेश्वराय नमः

मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर                मैहैम्हुहल्ला बैजनथ्था)

ज्येष्ठ मास कृष्ण ~~पक्ष~~ एकादशी तिथि के दिन ज्ञान माधव दर्शन ~~माधव~~ वार्षिक यात्रा इन के दर्शन पूजन करने वाले नर, नारियों के हृदय में ज्ञान उत्पन्न होता है। ज्ञान-माधवाये नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर सी० के० ३५) १८ मैहैमहल्ला ज्ञानवापी तारकेश्वर के मन्दिर में]

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

"शुक्रे ज्येष्ठर्क्षे के पूर्वायुते मासिशुचावपि।
मासि प्रौष्ठपदे चैव भद्रायामुत्तरे तथा।।"

अर्थ ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठा नक्षत्र से युक्त अथवा तीनों [illegible] नक्षत्रों से युक्त भाद्र मास में, भद्रा नक्षत्र से युक्त तिथि होने पर जो जा रहे जहाँ स्नान करके शंकर जी का पूजा करें। काशी में विश्वनाथ जी का दर्शन करें। ज्येष्ठ कृष्ण १३ त्रियोदशी के दिन प्रातः प्रदोष काल कपिलेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। ज्येष्ठ कृष्ण त्रियोदशी तिथि के दिन से बटसावित्री व्रत प्रारम्भ होती है। ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रियोदशी तिथि के दिन उपशान्तेश्वर दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा

प्रमत्त शुक्ल [illegible] महाशान्त होते हैं

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

## वट सावित्री व्रतम्

वट सावि सावित्री विधि: → अमायाञ्च तथा जेष्ठे वटमूले
महा सती। त्रिरात्रौ पोषिता नारी विधिनानेन पूजयेत॥
सावित्री प्रतिमां कुर्यात् सौवर्णी वापि मृण्मयीम्॥
सप्त धान्येन सफुलां सावित्री प्रतिमां शुभाम्।
विधिना षोडशोपचारैः सम्पूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्॥
तन्मन्त्रः —
सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती ब्रह्मणः
प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रति गृह्यतामिति॥

अर्थ — तीन रात्रि तक उपवास करने वाली स्त्री सावित्री की सोने की अथवा मिट्टी की प्रतिमा बनावे सप्त धान्य के ऊपर उस प्रतिमा को रखे, साथ ही षोडशो पचार से पूजन कर उस प्रतिमा को ब्राह्मण को प्रसन्नता के लिये ब्राह्मण को दान करें।
सोने के साथ महासती सावित्री की प्रतिमा ब्राह्मण की प्रसन्नता के लिये दान कर रही हूं उसे ब्राह्मण ग्रहण करें।

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा तिथि के दिन से ज्येष्ठ शुक्ल दशमी दशहरा तिथि के दिन तक प्रति दिन दशाश्वमेध घाट में स्नान करके दशाश्वमेधेश्वर का आदि

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

के दर्शन, पूजा करने मात्र से दश जन्मों के किये गये पाप नष्ट होते है।

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे पक्षं रुद्रसरे नरः।
कुर्वन्वै वार्षिकीं यात्रां न विघ्नै रभिभूयते ॥६२॥

ज्येष्ठे शुक्ल द्वितीयायां स्नात्वा रुद्रसरोवरे।
जन्म द्वय कृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।
स्नातो दशहरायां यः पूजयेल्लिंगमुत्तमम्।
भक्त्या दशाश्वमेधेशं न तं गर्भ दशास्पृशेत्।
॥६१॥

[काशीखण्ड ३]

अर्थ— ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में रुद्र सरोवर में स्नान करके वार्षिक यात्रा करने वाला व्यक्ति विघ्नों से आक्रान्त नहीं होता।

ज्येष्ठ मास के शुक्ल द्वितीया तिथि को, रुद्र सरोवर में स्नान करके, व्यक्ति दो जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है।

दशहरा तिथि को स्नान कर जो व्यक्ति भक्तिपूर्वक उत्तम लिङ्ग दशाश्वमेधेश्वर का पूजन करता है वह पुनः गर्भ में प्रवेश नहीं करता।

अर्थ - अन्तर्गृही यात्रा के
जो काशी की दक्षिण भाग में ब्रह्मेश्वर
शब्द का उच्चारण करता है तथा दर्शन करता
है तो वह ब्रह्म लोक में निवास करता है।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

एवं सर्वासु तीर्थेषु क्रमस्नायी नरोत्तमः ।

आ शुक्लपक्ष दशमि प्रतिजन्माघमुत्सृजेत् ।
॥ ८ ॥

तिथिं दशहरां प्राप्य दशजन्माघहारिणीम्
दशाश्वमेधिके स्नातो यामीं पश्येन्न यातनाम्
॥ ९ ॥

लिङ्गं दशाश्वमेधेशं दृष्ट्वा दशहरातिथौ ।

दशजन्मार्जितैः पापैस्त्यज्यते नात्र संशय
॥ ९० ॥

स्वर्धुन्याः पश्चिमे तीरे नत्वा दशहरेश्वरम्

न दुर्दशामवाप्नोति पुमान्पुण्यतमः क्वचित् ॥ ९३ ॥

यत्काश्यां दक्षिणद्वारमन्तर्गेहस्य कीर्तितं ।

तत्र ब्रह्मेश्वरं दृष्ट्वा ब्रह्मलोके महीयते ।
॥ ९४ ॥

{काशीखण्ड

अर्थ- इसी प्रकार क्रमशः जो नरोत्तम शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि से लेकर सभी तिथियों में स्नान करता है वह प्रतिजन्मों के पापों को त्याग देता है। दशजन्मों के पाप को नाश करने वाली दशहरा तिथि को पाकर जो दशाश्वमेध में स्नान करता है वह यम की यातना को नहीं देखता। दशहरा तिथि को दशाश्वमेधेश्वर लिङ्ग का दर्शन करके व्यक्ति दशजन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है।

गंगा के पश्चिमतट पर दशहरेश्वर लिङ्ग को प्रणाम करके पुण्यतम मनुष्य दुर्दशा को नहीं प्राप्त करता।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ज्येष्ठ शुक्ल प्रथम गुरूवार के दिन बृहस्पती श्वर दर्शन वार्षिक यात्रा पुरुषार्थ से करें। इन के दर्शन, पूजन करने वाले नर, नारियों के ग्रह जो निम्न स्थान में है कष्ट दे रहे है, वह ग्रहण दर्शन करते ही शान्त होते है और बृहस्पति के अर्चना से संकट आदि भी शान्त होते है। बृहस्पतीश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी॰ मोहल्ला दशाश्वमेध चौकी, देशी के उत्तर बगल के बड़े शिवालये में है दशाश्वमेध घाट]

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन प्रातः बाराही देवी दर्शन वार्षिक यात्रा करें। बाराही देवी अपने दर्शन करने वाले भक्तों के संकट, विघ्न और रोग दूर करती है। बाराही देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

डी० १ मैं०मुहल्ला त्रिपुरा भैरवी घाट ] ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी तिथि के दिन प्रातः

दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

नरसिंह ~~विष्णु~~ वे नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर

मै० मुहल्ला हनुमान घाट ]

ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन ~~काशीपुरा में~~ ज्येष्ठा गौरी ~~दर्शन~~, ज्येष्ठेश्वर — दर्शन — पूजन वार्षिक यात्रा करें।

ज्येष्ठा गौरी देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर के० ६३/२४ मै० मुहल्ला भूतभैरव]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

सर्वसिद्धिप्रदा गौरी ज्येष्ठा ज्येष्ठा समन्ततः ।

ज्येष्ठे मासि सिताष्टम्यां तत्र कार्यो महोत्सवः ॥१३॥

रात्रौ जागरणं कार्यं सर्वसम्पत्समृद्धये ॥१४॥

ज्येष्ठां गौरीं नमस्कृत्य ज्येष्ठवापी परिप्लुता ।

सौभाग्यभाजनम्भूया द्योषा सौभाग्यभागपि ॥१५॥

ज्येष्ठा गौरी तु सम्पूज्य तीऽभ्यर्च्य सर्वज्येष्ठमभीप्सुभिः ।

[काशीखण्ड अ०

अर्थ— ज्येष्ठा गौरी सभी सिद्धियों को देने वाली तथा श्रेष्ठ है ज्येष्ठ महीने के शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि को वहाँ महोत्सव करना चाहिये तथा सभी सम्पत्तियों की प्राप्ति के लिये रात्रि में जागरण करना चाहिये।

ज्येष्ठ वापी में स्नान कर ज्येष्ठा गौरी को नमस्कार कर सौभाग्यवती स्त्री भी सौभाग्य का पात्र बन जाती है।

सभी से अपने को बड़प्पन चाहने वाले लोगों को ज्येष्ठा गौरी की पूजा करनी चाहिये।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी दशहरा तिथि के दिन दशाश्वमेध घाट में स्नान करके गङ्गेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। गङ्गेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी॰ मैं मोहल्ला। दशाश्वमेध घाट] (~~काशी में अन्य और भी गङ्गेश्वर है~~) ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तिथि के दिन प्रातः गौतम तीर्थ में स्नान करके गौतमेश्वर दर्शन करें त्र्यम्बकेश्वर के मन्दिर के बगल में ~~कुण्डा~~ कुआँ के रूप में है। गौतम तीर्थ है। स्नान करके ~~दर्शन~~ वार्षिक यात्रा दर्शन करें।

गौतमेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर डी॰ मैं है मुहल्ला। ]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

गङ्गेश्वरस्य लिङ्गस्य काश्यां दृष्टिः सुदुर्लभा।
तिथौ दशहरायांच योगङ्गेशं समर्चयेत् ॥२॥

तस्य जन्म सहस्त्रस्य पापं संक्षीयते क्षणात्।

दृष्टं गङ्गेश्वरं लिङ्गं येन काश्यां सुदुर्लभम्।

ततोऽपि दुर्लभं काश्यां लिङ्गं गङ्गेश्वराभिधम्।

यस्य संदर्शनं पुंसां भवेत् पापक्षयाय वै ॥

[काशी खण्ड अ०

काशी में गङ्गेश्वर लिङ्ग का दर्शन दुर्लभ है। दशहरा तिथि में जो गङ्गेश्वर का पूजन करेगा तो उसके हजारों जन्म का पाप नष्ट हो जाता है।

काशी में दुर्लभ गंगेश्वर लिङ्ग का जिसने दर्शन किया, उससे भी दुर्लभ काशी में गंगेश्वर लिङ्ग है जिसका दर्शन मनुष्यों के पापनाश के लिये होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल ~~पक्ष~~ चतुर्दशी तिथि के दिन प्रातः दशाश्वमेध घाट में स्नान करके ज्येष्ठेश्वर (ज्येष्ठ विनायक) दर्शन पूजन यात्रा करें। ज्येष्ठ विनायक ~~स्वराय~~ नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर के० में है मुहल्ला ~~दशाश्वमेध~~ ~~भूतभैरव~~

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ज्येष्ठो नाम गणाध्यक्षो ज्येष्ठो मे पुत्र सम्पदि।
ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दश्यां सम्पूज्यो ज्येष्ठतासये ॥१०२॥
[काशीखण्ड अ० ५७]

अर्थ – ज्येष्ठ भगवान् गणेश का नाम है तथा सम्पत्ति में मेरा पुत्र ज्येष्ठ है अतः ज्येष्ठता की प्राप्ति के लिये ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी को पूजा करनी चाहिये।

चैत्र ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन प्रातः ज्येष्ठेश्वर दर्शन, पूजन यात्रा करें। ज्येष्ठेश्वराय नमः
[मन्दिर नम्बर के० मुहल्ला सप्तसागर] काशी देवी की दर्शन करके ज्येष्ठेश्वर के दर्शन करें।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दश्यां सोमवार।

अनुराधयोः।

तत्पर्वणि महायात्रा कर्तव्या तत्र मानवैः॥

॥९॥

ज्येष्ठस्थानं ततः काश्यां तदा भूदति पुण्यदम्

तत्र लिङ्गं समभवत्स्वयं ज्येष्ठेश्वराभिधम् ॥१०॥

तल्लिङ्ग दर्शनात्पुंसां पापं जन्मशताजितम्।

तमोऽर्कोदयमप्येव तत्क्षणात् देव नश्यति

[काशी खण्ड अध्याय ६३ श्लोक ११]

ज्येष्ठेश्वरं समालोक्य न भूयो जायते भुवि।

काशी खण्ड अ०

अर्थ — मनुष्यों को उस पर्व में वहाँ की यात्रा करनी चाहिये। तदनन्तर काशी में अतिपुण्यप्रद ज्येष्ठनामक स्थान हुआ वहीं पर ज्येष्ठेश्वर नामक लिङ्ग का प्रादुर्भाव हुआ।

उस लिङ्ग के दर्शन से मनुष्यों के सैकड़ों जन्म के अर्जित पाप नष्ट हो जाते हैं। उसी क्षण अज्ञानान्धकार भी नष्ट हो जाता है।

ज्येष्ठेश्वर के दर्शन से मनुष्य पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करता।

अर्ज करना शेष है —

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन गङ्गा आदि तीर्थों में (असमर्थ होतो घर में) स्नान संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर यथाशक्ति छाता, जूता पतला कपड़ा अन्न आदि दान करके एक से यथा शक्ति साधु सन्त, संन्यासी, ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। **आषाढ मास** प्रारम्भ

आषाढ़ कृष्ण प्रति पदा तिथि के दिन से अमावस्या तिथि तक योगिनी व्रत प्रारम्भ।

"आषाढ कृष्ण पक्षेतु योगिनि व्रत माचरेत्
अत्र व्रतस्य पुण्यन कुष्ठं नश्याति वैधुर्वम्"
[काशीखण्ड अ. ]

अर्थ

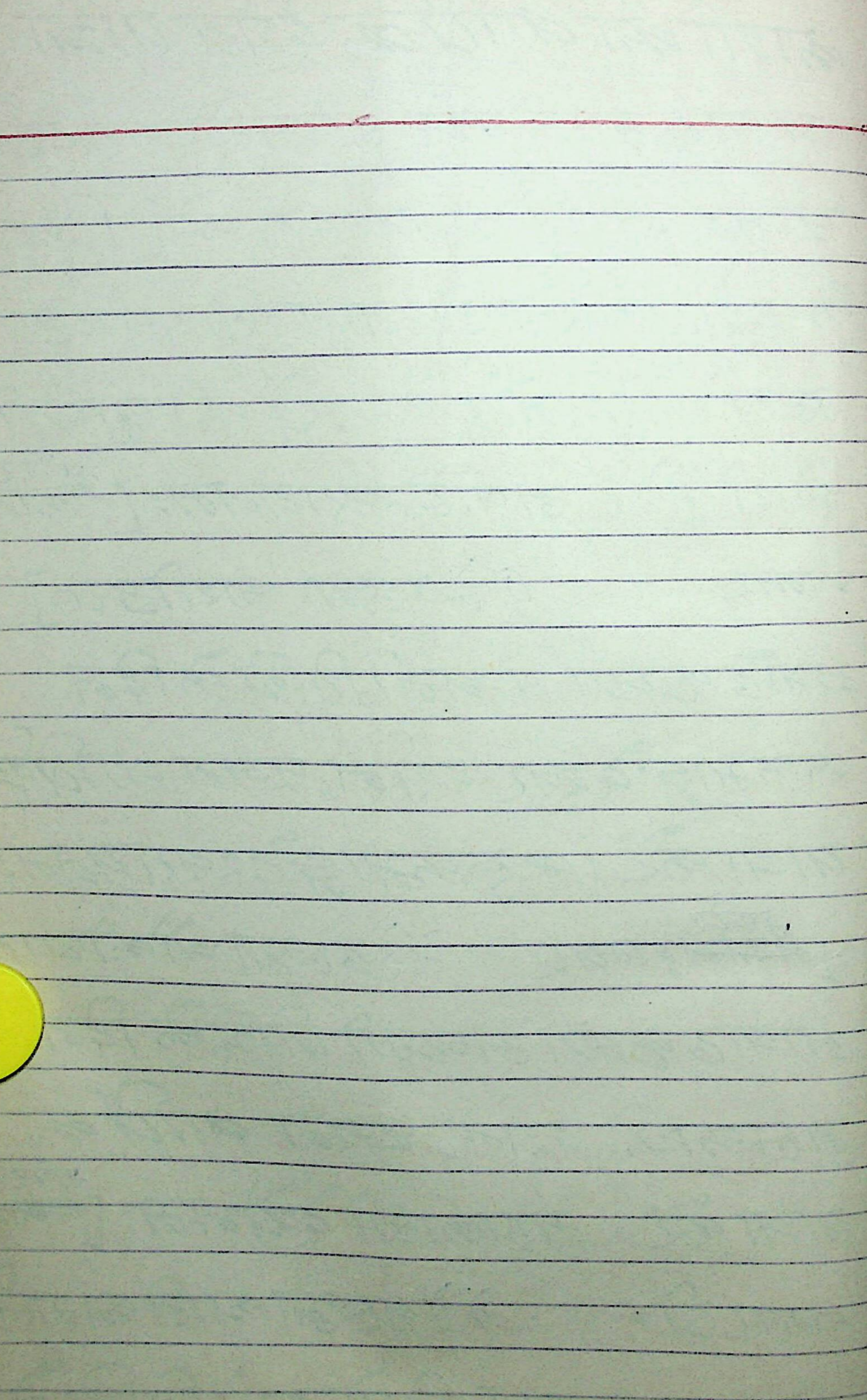
काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

आषाढ़ मास पर्यन्त अषाढ़ेश्वर दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें। इनके दर्शन करने से मानसिक कष्ट दूर होते है, और ऐश्वर्य की प्राप्ती होती है। अषाढ़ेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर मैं है मुहल्ला काशीपुरा]

अषाढ़ कृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन रुक्माङ्गदेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। रुक्माङ्गदेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर मैं है मुहल्ला चौकीघाट]

आषाढ़ कृष्ण अष्टमी तिथि के दिन महाकाली दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। महाकाली देव्यैनमः [मन्दिर नम्बर डी॰ मैं है मुहल्ला कालिका गली]

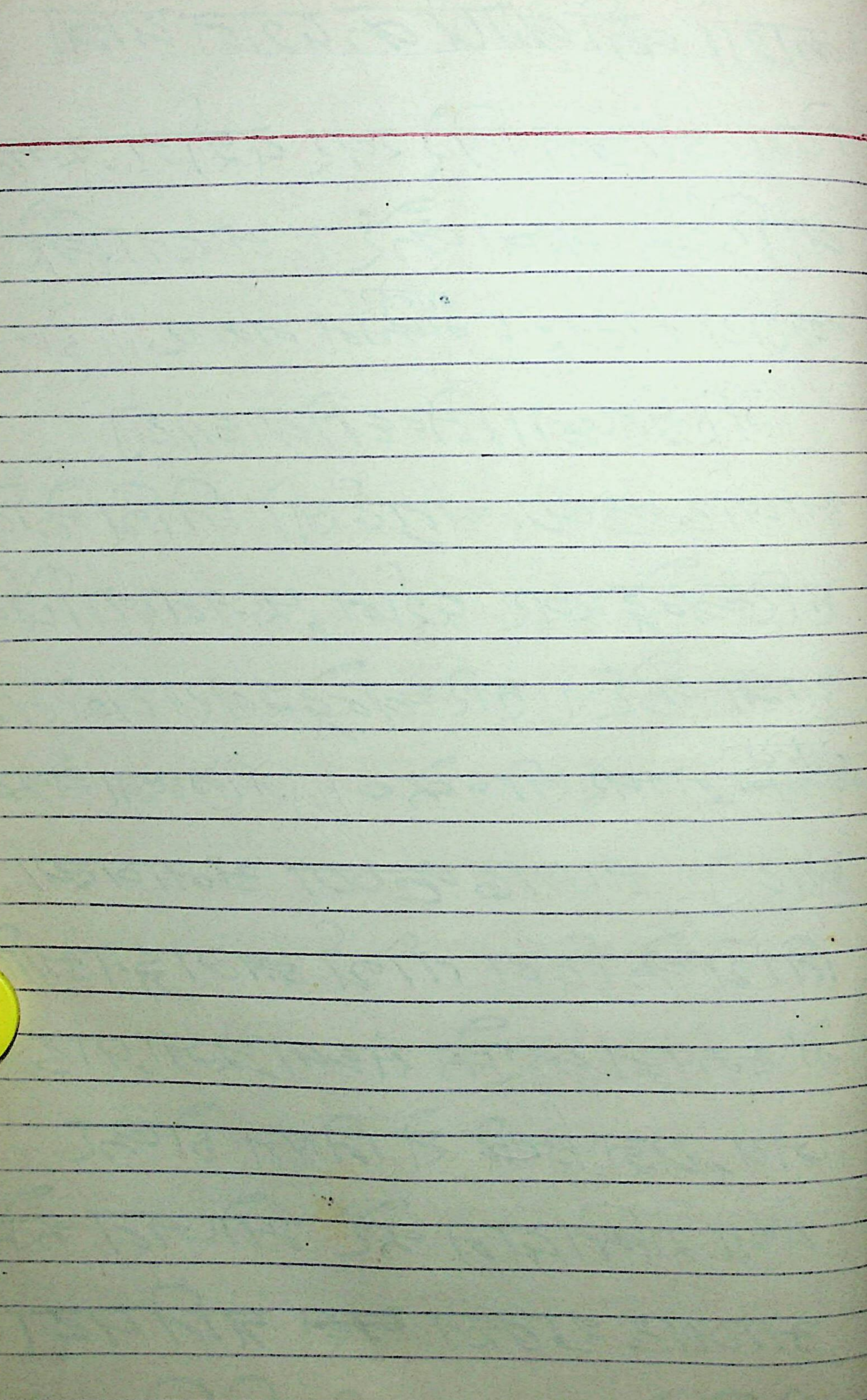
आषाढ़ कृष्ण त्रियोदशी तिथि के



# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

के दिन आत्मा विरेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। आत्मा वीरेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर सी० के० ७/१५८ में [मुहल्ला सिन्धीया घाट]

आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी तिथि के दिन हरिश्चन्द्रेश्वर दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। हरिश्चन्द्रेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर सी० के० ७/१६१ में [मुहल्ला संकठा घाट] आषाढ़ कृष्ण अमावस्या तिथि के दिन तीर्थ गङ्गा आदि में स्नान करके संध्या, पूजा, पाठ जप, यज्ञ आदि से निवृत्त होकर यथा शक्ति दान करें भोजन करें। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा तिथि से पञ्चमी तिथि तक



काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

जगननाथ भगवान का दर्शन वार्षिक यात्रा करें। काशी में रथ यात्रा प्रसिद्ध है। आषाढ़ शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन शवकाली दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। शवकाली देव्यै नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर मे है मुहल्ला केदेउनाथ पुरा चौषष्टि देवी से पश्चिम बगल में है।

आषाढ़ शुक्ल एकादशी तिथी के दिन महालक्ष्मी विष्णु दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर डी. ५२/३८ मे है मुहल्ला लक्ष्मी कुण्ड]।

आषाढ़ शुक्ल त्रियोदशी तिथि के दिन अत्रीश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें। अत्रीश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर मे है मुहल्ला नारदघाट]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

आषाढ़ शुक्ल चतुर्दसी तीथी के दिन प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर आषाढेश्वर दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें। इन के दर्शन से अपनी इन्द्रिय और शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। अषाढेश्वर स्थान: [ मकान नम्बर ... तीर्थ में त्रिलोचन घाट में स्नान करके अषाढेश्वर का दर्शन करें।

त्रिलोचन घाट में ... तीर्थ में स्नान करके आषाढ़ेश्वर दर्शन करें।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण मास प्रारम्भ में

श्रावण मास ~~भर करके~~ पर्यन्त

दुर्गा कुण्ड में स्नान कर

दुर्गा देवी दर्शन यात्रा करें

प्रत्येक शनिवार एवं मंगल वार के दिन

दुर्गा कुण्ड में स्नान कर

दुर्गा जी की दर्शन वार्षिक

यात्रा करें और श्रावण ~~शुक्ल~~ कृष्ण

+ तृतीया तिथि के दिन तब

दुर्गा ~~गौरी~~ प्रदक्षिणा दर्शन वार्षिक यात्रा

करें। अतः अवकाश लेकर

प्रयत्न पूर्वक यात्रा करें।

+ श्रावण शुक्ल चतुर्थी के दिन

प्रातः ढुण्ढिराज दर्शन एवं

वार्षिक यात्रा करें।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

~~श्रावण मास पर्वारम्भ~~

श्रावण मास

श्रावणे सर्वपापघ्नमस्तु तत्रापि वै विधौः।
वासरे सर्वपापघ्नं पूर्णिमायां महाघहम् ॥२३॥

(का० खं० रहस्य)

अर्थः- श्रावण महीना समस्त पापों को नाश करने वाला है। सोमवार भी सब पापों को दूर करने वाला है। उसमें भी पूर्णिमा तिथि यदि हो तो महापापों का भी नाश होता है। इसी तिथी के दिन केदारेश्वर का दर्शन करने से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं।

श्रावण मास में शिव शक्ति के ~~उपासक~~ दर्शन, पूजन, उपासना करते हैं, श्रावण ~~महीने भर~~ पर्यन्त महामृत्युञ्जय, धनवन्तरी, अमृतकुँआ वृध कालेश्वर तीर्थ अमृत कुण्ड में स्नान प्रति दिन दक्षेश्वर, नागेश्वर, असी-ताड़ भैरव, महामृत्युञ्जय, मालती श्वर, महाकालेश्वर आदि के दर्शन

व्यक्ति को कोढ़, विस्फोट (फोड़ा) दद्रु (सूखी खुजली) वि-चर्चिका (काला दाग) कफादि रोग छोड़ देते हैं।

इसके जल के सेवन से व्यक्ति को अग्नि मान्द्य, श्वास, पेट, प्रवाहिका, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डु आदि रोग नहीं होते।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण कृष्ण प्रति पदा तिथि

के दिन प्रातः भवानी शंकर दर्शन यात्रा

प्रयान पूर्वक करें। भवानिशंक-

-राय नमः [मन्दिर नम्बर सी.के. ३७/२ में

में है मुहल्ला बांसफाटक]

श्रावण कृष्ण द्वितीय तिथि के दिन

• मल्लीकार्जुन वार्षिक दर्शन यात्रा

करें। मल्लीकार्जुनेश्वरायनमः [

[नम्बर — में है मुहल्ला त्रिपुरान्तेश्वर

के नाम से प्रसिद्ध है, लाल टिला शिवपुर।

सिगरा] इन के दर्शन, पूजन से

असाध्य रोग ठिक होते है।]

श्रावण कृष्ण तृतीया तीथी के दिन ज्येष्ठा

गौरी दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें। इन के

दर्शन से सब मंगल कार्य होते है। ज्येष्ठा गौरी

देव्यै नमः [मन्दिर, नम्बर के. ६३/२४ में है अमृत भैरव

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण के प्रथम सोमवार के दिन प्रातः संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर केदार घाट में स्नान करके केदारेश्वर के दर्शन पूजन करने के पश्चात्। शंकर यात्रा प्रारम्भ होती है। "शंकर दर्शन यात्रा" केदारेश्वराय नमः, तिलभाण्डेश्वर, लोमसेश्वराय नमः, गौतमेश्वराय नमः, त्र्यम्बकेश्वराय नमः, बड़ादेवेश्वराय नमः [ मे है म, भवानी शंकराय नमः, अविमुक्ते-श्वराय नमः, मोक्षेश्वराय नमः, कालराजेश्वराय नमः, वैकुण्ठे-श्वराय नमः, काशी विश्वनाथ जी, तारकेश्वराय नमः, धर्मेश्वराय नमः, निष्कण्ठेश्वराय नमः, आत्माविरेश्वराय नमः, उपशान्ते-श्वराय नमः, गभस्तीश्वराय नमः, पञ्चाक्षेश्वराय नमः, नर्मदेश्वराय

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

नमः, आदि महादेवस्वरायनमः, त्रिलोचने स्वरायनमः, कामेस्वराय नमः, ओंकारेस्वरायनमः, कृतिवासेस्वरायनमः, अरुणहरे स्वरायनमः, सती स्वरायनमः, रत्ने स्वरायनमः, धन्वन्तरीकुण्डाय नमः, "अम्रत कुण्ड के जल पीने से सभी प्रकार के रोग शान्त होते है।" दक्षेस्परायनमः, नागेस्वरायनमः, महाकाले स्परायनमः, वृधकाले स्वरायनमः, महाम्रतुंजये स्वरायनमः, मध्येमेस्वरायनमः, अङ्गीरसे स्वरायनमः, जागेस्वरायनमः। इन सब ~~महा~~ शिव मन्दिरों का दर्शन करने के

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

पश्चात -। शंकर यात्रा पूर्ण होता है यात्री संकल्प ~~करके~~ छोड़कर शंकर जी के स्मरण करते हुए दर्शनार्थी अपने अपने घर जाते है ~~हमारे~~ श्रावण ~~शुक्ल~~ मास के ~~प्रथम~~ प्रत्येक सोमवार के दिन हमारी काशी के ~~अखड़ा (बद्ध युद्ध)~~ ~~के~~ और काशी के शंकर जी के भक्त सब ~~मूर्ति~~ घड़ा साथ में लेकर आते है, केदार घाट में स्नान करके संकल्प लेकर दर्शन ~~कर पूजा~~ कर गङ्गजल चढा~~करते~~ते है। ~~लगभग~~ ~~सवा~~ पाँच सौ यात्री यात्रा करते है। वह शंकर यात्रा तीन घण्टा की है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

केदारेश्वराय नमः [ मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर

बी 6/102 मुहल्ला केदारघाट ]

केदारघाट में स्नान

~~केदारे स्वर~~ केदारेश्वर, ~~स्नान~~

~~स्नान~~

दर्शन वार्षिक यात्रा करें।

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण कृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन
प्रातः अविमुक्त प्रदक्षिणा दर्शन.
वार्षिक यात्रा करें। यह यात्रा प्रयत्न
पूर्वक करें। श्रावण कृष्ण अष्ट-
मी तिथि के दिन कामाक्षा देवी
और बटुक भैरव दर्शन, पूजन
वार्षिक यात्रा करें। श्रावण कृष्ण
दशमी तिथि के दिन नर्मदेश्वर
दर्शन यात्रा करें। इन के दर्शन
करने वाला व्यक्ति यहलोक
में सुख, शान्ती पाता है, पर
लोक मे पशुयोनि में नही जाता।
नर्मदेश्वराय नमः [ मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर
मेहे म. त्रिलोचन के ~~पीछे~~
पूर्व बगल मे विराज मान है।

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण कृष्ण त्रयोदशी
प्रदोष के दिन व्रत रह कर काशी
विश्वनाथ अन्तर्गृही प्रदक्षिणा।
दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा प्रयत्न
पूर्वक कर अवकाश लेकर कर
ना चाहिये। श्रावण कृष्ण चतु
चतुर्दशी तिथि के दिन प्रातः
गरुडेश्वर दर्शन, पूजन यात्रा
करें। गरुडेश्वराय नमः [मकान
मन्दिर नम्बर डी० ३२/१०२ में है मुहल्ला -
श्रावण कृष्ण चतुर्दशी तिथि के
दिन पुष्प दन्तेश्वर दर्शन, पूजन
वार्षिक दर्शन यात्रा करें।
पुष्पदन्तेश्वराय नमः [मकान मकान
नम्बर डी० ३२/१०२ में है। मुहल्ला। पतलेश्वर
चौसट्टी देवी के मन्दिर से पश्चिम

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

बगल में है। इन के दर्शन, पूजन
से ~~दरिद्रता~~ दरिद्रता दूर होता है निर्धनी
धनी होते है, रोगी निरोगी होते है।
श्रावण कृष्ण अमावस्या तिथि के
दिन प्रातः धन्वन्तरी कुण्ड में
स्नान करके दक्षेश्वर दर्शन, पूजन
~~यात्रा~~ वार्षिक यात्रा करें।
दक्षेश्वराय नमः (मन्दिर नम्बर
इन के दर्शन करने से स्थूल पाप
शान्त होते है, और अमृत कुण्ड
के जल पीने से पेट ~~सम्बन्धी~~
सम्बन्धी रोग ~~शान्त~~ नष्ट होते
है। श्रावण कृष्ण अमावस्या
तिथि के दिन प्रातः लक्ष्मी कुण्ड
में स्नान करके महालक्ष्मी
दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें।



काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन नव गौरी दर्शन प्रदक्षिणा वार्षिक करना चाहिए। अत: अवकाश लेकर प्रयत्न पूर्वक नवगौरी यात्रा करें। श्रावण शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन ढुण्ढि - राज दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें। ढुण्ढि राजाय नमः [मन्दिर नम्बर सी के ३५/२७ में है] करें। इस दिन इनके दर्शन से सब विघ्न दूर होते है। श्रावण शुक्ल पर्यन्त पक्ष दुर्गा कुण्ड में स्नान कर दुर्गा जी की दर्शन वार्षिक यात्रा करें। श्रावण शुक्ल पक्ष में दुर्गा दर्शन मेला लगता है। श्रावण शुक्ल पक्ष एकादशी तिथि से पूर्णिमा तिथि

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

तक्षक सारनाथेश्वर दर्शन वार्षिक
सारनाथ है।
यात्रा ]] श्रावण शुक्ल नाग-
पञ्चमी तिथि के दिन ~~नाग~~
ॐ नाग दर्शन पूजन वार्षिक यात्रो
वासुकी स्वर तीर्थ —
सिन्धिया घाट में स्नान करके संकल्प लेकर
कर वासुकी श्वर दर्शन ~~का~~ करें ~~करेंगे~~
वासुकी श्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर
सी॰ के॰ ७/११ में है मुहल्ला सिंधिया घाट]
नागेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर सी॰ ~~के~~
के॰ ~~१~~ १/२१ में है मुहल्ला पटनी टोला]
महाकाल नागेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~
नम्बर में है मुहल्ला दारानगर अमृत
कुण्ड के बगल में है]
तक्षकेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर
है मुहल्ला अघोरनाथ की तकीया है



काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

विन्ध्य वासुकी श्वरायनमः [ ~~मकान~~ मन्दिर नम्बर

में मुहल्ला अघोरनाथ की तकीया

करकोटनागेश्वरायनमः [ ~~मकान~~ मन्दिर

नम्बर जे० २३/२०६ में मुहल्ला

नाग कुँआ जैतपुरा थाकुना के पश्चिम बगल में है। नाग यात्रा करने वाले

स्त्री पुरुषों को सर्पे से काटने का भय

नहीं रहता है और धन ऐश्वर्य की प्रापती

होती है। खेत में या घर में सोने चांदि के रुपया

जो जमिन के अन्दर गड़ा है वह सब रुपया कहा

के नाग देवता रक्षा करते है। इस यात्रा से

नाग देवता प्रसन्न होते है जमिन में गड़ा

हुआ धन किसिम रूप में आकर आपको

बता देते है। जमिन में गड़ा हुआ धन को निकाल

लने के लिए ~~कि~~ तीन साधन है, वैदिक, पौराणी

क तथा तान्त्रि विधान से ~~~~ जो जैसे

ब्राह्मण ~~मिले~~ विद्वान मिले उन के अनुसार

पूजा पाठ करके रूपया के रक्षा करने

वाले नाग देव को प्रसन्न करे ~~~~ वह

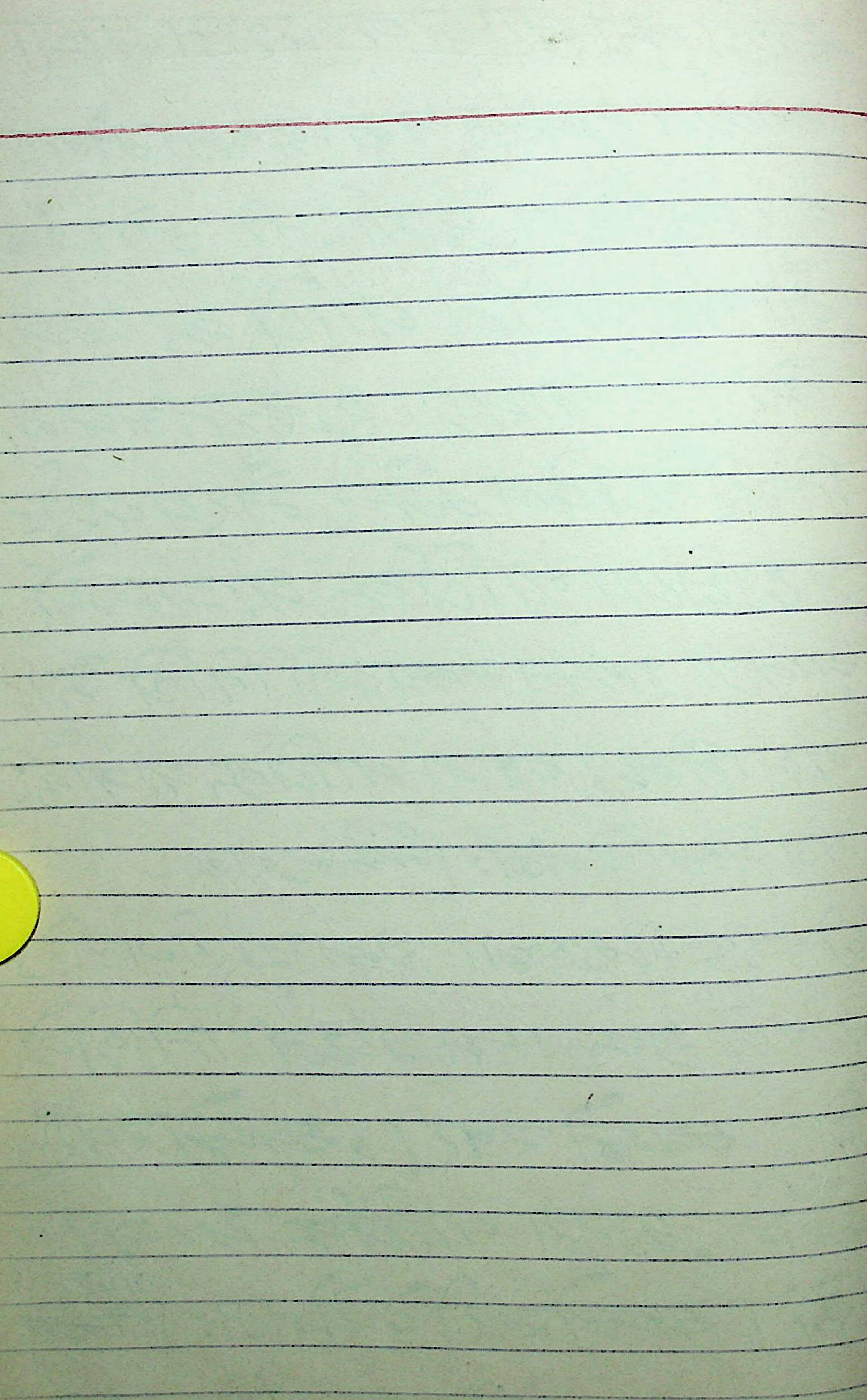
धन दूसरे दिन प्रातः ४ बजे स्नान सिध्या

करने के पश्चात नागदेव से प्रार्थना करके खोद

ना प्रारम्भ करे साफ वा कोई भी गन्दु मिले उनको

# काशी की वार्षिक दर्शनयात्रा

श्रावण शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगल
वनकटी
बार के दिन दुर्गा जी और ~~संकट~~
बनकटी हनुमान व शंकर
मोचन दर्शन वार्षिक यात्रा
करें। श्रावण शुक्ल अष्टमी
एकादश
तिथी के दिन ~~[illegible]~~ भैरव दर्शन
प्रदक्षिणा वार्षिक यात्रा करें।
श्रावण शुक्ल एकादशी तिथि के दिन
महाविष्णु दर्शन वार्षिक यात्रा करें]
मन्दिर
महाविष्णवे नमः [~~मकान~~, नम्बर
डी.५/१७ में है मुहल्ला अन्नपूर्णा गली]
अन्न पूर्णा जी के मन्दिर में है।
श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि के
दिन स्वप्नेश्वरी, स्वप्नेश्वरी
दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा
मन्दिर
करें। स्वप्नेश्वरी देव्यै नमः [~~मकान~~
नम्बर में है मुहल्ला शिवाला
हनुमान जी के बगल में।



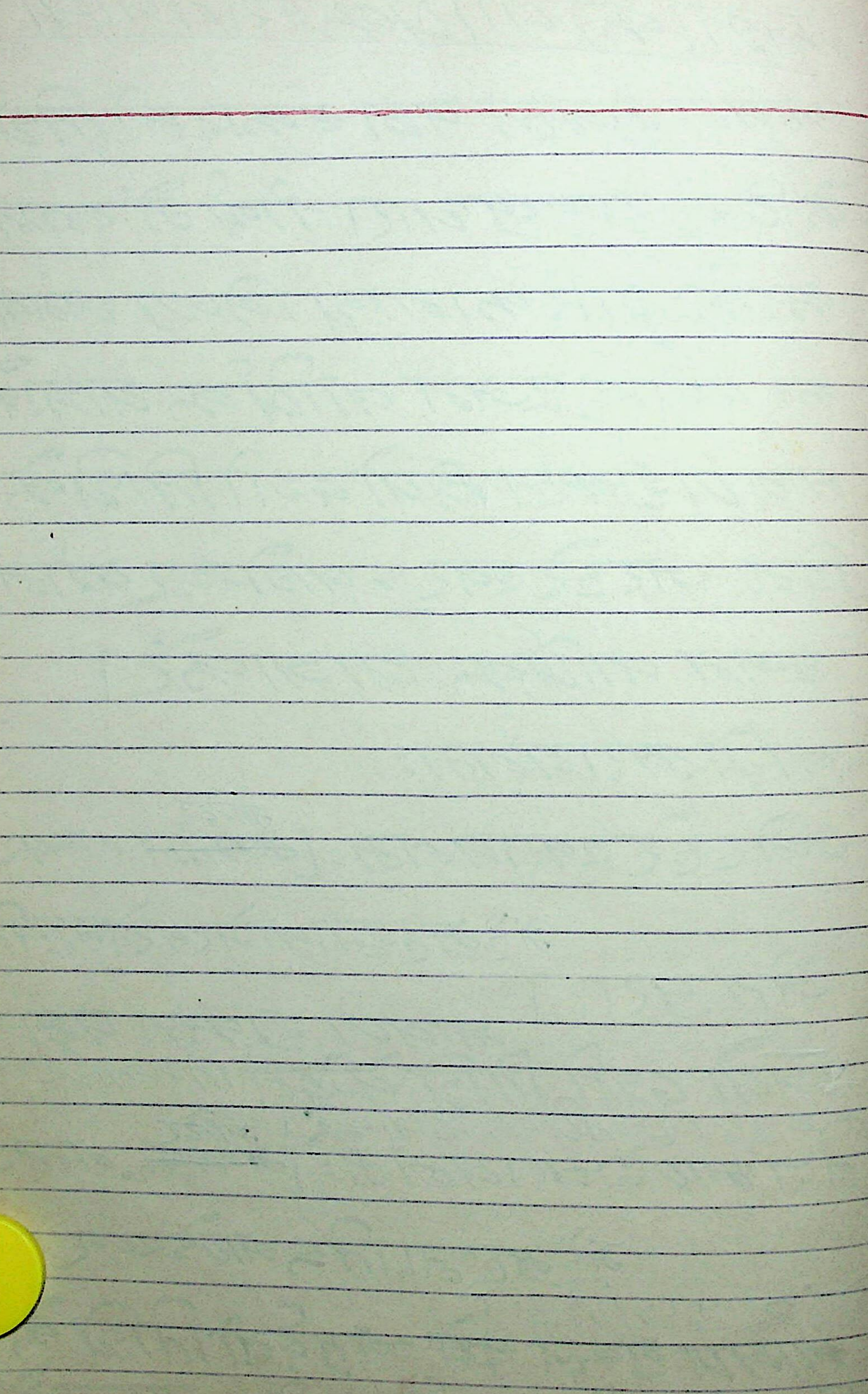
श्रावण शुक्ल अष्टमी तिथि
के दिन बैजनाथ त्रिपाठी
जी ~~के~~ यात्रियों को प्रेरणा करके
लग-भग ~~एक~~ दो सौ यात्री
साथ में लेकर बैजनाथ
त्रिपाठी जी दाहिने वर्ग से
दुर्गा ~~ब~~ प्रदक्षिणा यात्रा जाते हैं।
[नोट काशी के संपूर्ण यात्रा
वार्षिक यात्रा अपने मण्ड
ली के साथ प्रति वर्ष करते हैं
। ]

# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

श्रावण शुक्ल पक्ष एकादशी तिथी
के दिन सङ्खुधारा तीर्थ में स्नान
करके ·द्वारिकानाथ विष्णु भगवान
का दर्शन, पूजन वार्षिक यात्रा करें।
श्रावण शुक्ल त्रियोदशी तिथि के
दिन जरहरेश्वर ·बागेश्वर दर्शन
पूजन वार्षिक यात्रा करें।

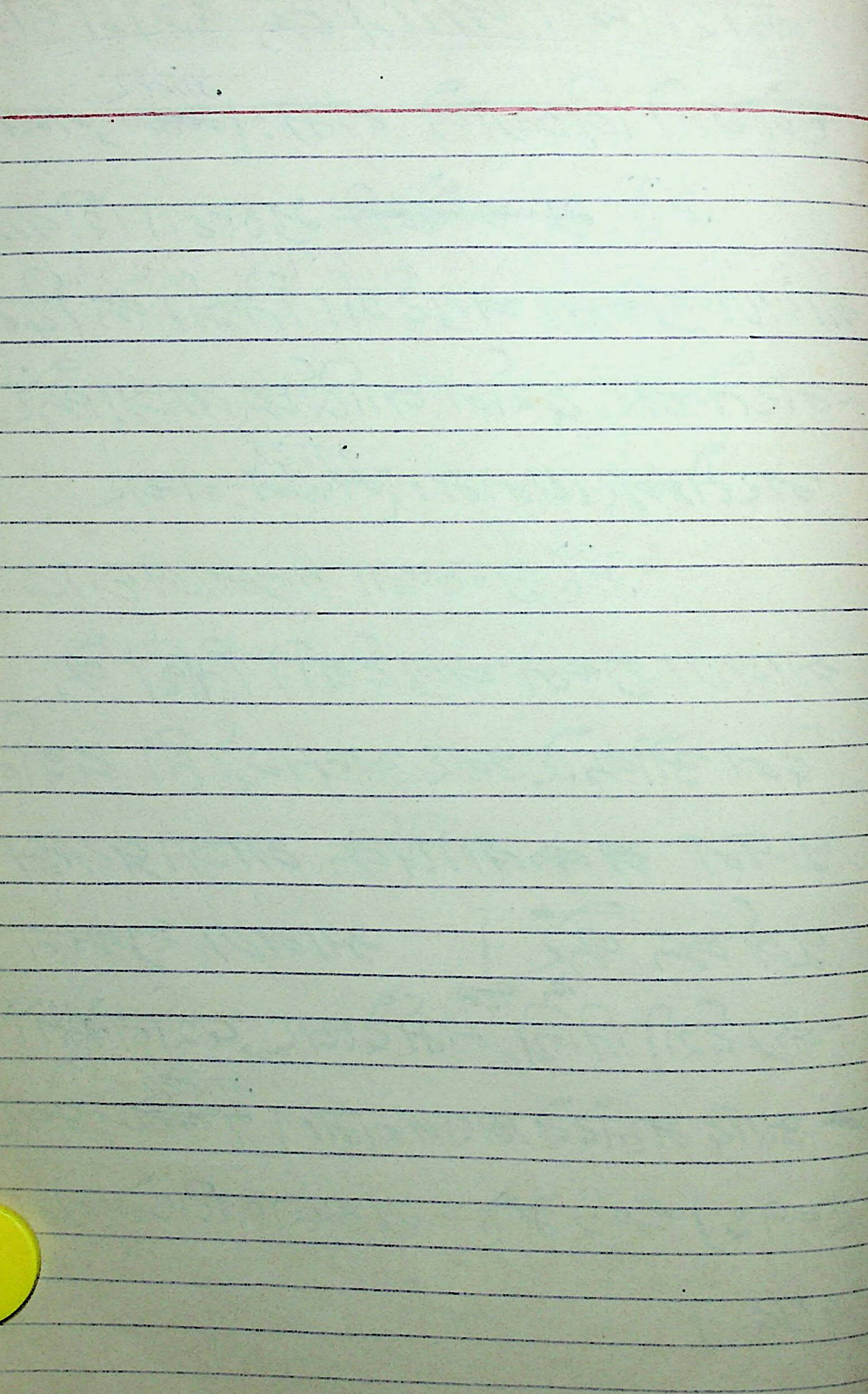
बागेश्वराय नमः
ज्वोरहरेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर नम्बर
·        में है ~~मुहल्ला~~ बागेश्वरी गली
जैतपुरा ]

श्रावण शुक्ल पक्ष
·~~त्रियोदशी तिथि के दिन~~ तिलभाण्डेश्वर
दरशन वार्षिक यात्रा करें।
तिलभाण्डेश्वराय नमः [~~मकान~~ मन्दिर, नम्बर
·        में है ~~मुहल्ला~~ तिलभाण्डेश्वर पर
सोयंभू शिवलिंग है।
श्रावण शुक्ल ~~पक्ष~~ चतुर्दशी तिथि के
दिन हयग्रीव दर्शन वार्षिक यात्रा करें।



# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

हयग्रीव विष्णवे नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर
मैं है ~~मु० मैदागिन~~ मुहल्ला शिवाला
आनन्दमयी माता अस्पताल के पास में]
श्रावण शुक्ल चतुर्दशी तिथी के दिन
भरतेश्वर दर्शन वार्षिक यात्रा करें।
भरतेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर
मैं है मु० हल्ला हनुमानघाट]
श्रावण शुक्ल चतुर्दशी तिथि के
दिन ओंकारेश्वर अन्तर्गृही दर्शन
पूजन वार्षिक यात्रा प्रयत्न
पूर्वक करें। श्रावण शुक्ल
चतुर्दशी तिथि के दिन नर्मदेश्वर, दर्शन करें
आदि महादेवेश्वराय नमः [मन्दिर ~~मकान~~, नम्बर
ए० १३/२ मैं है मुहल्ला त्रिलोचन
घाट]

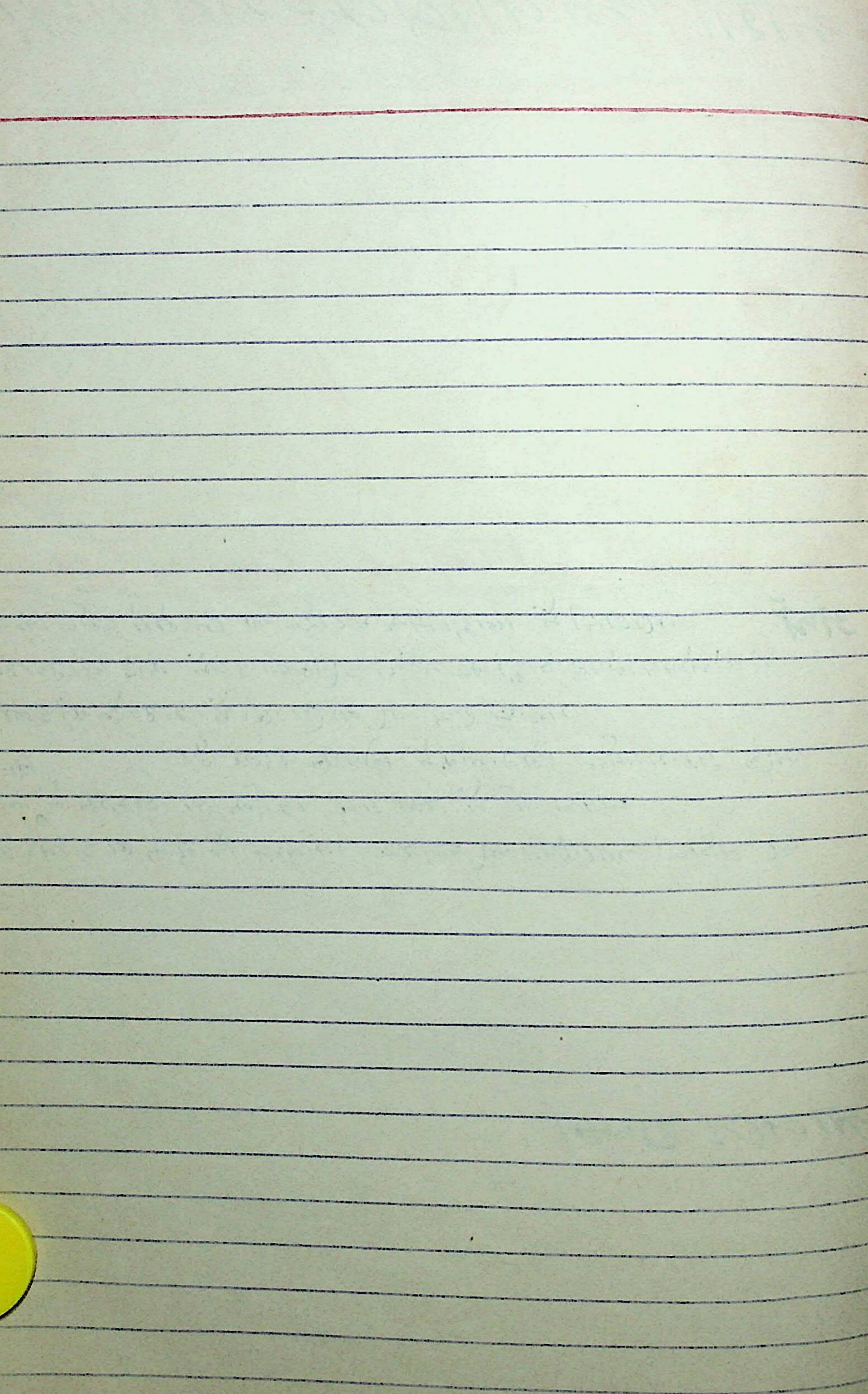


# काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

वाराणस्यां महादेवो दृष्टो यैर्लिङ्गरूपधृक् ।
तैन त्रैलोक्यलिङ्गानि दृष्टानीह न संशयः
॥२३॥
वाराणस्यां महादेवं समभ्यर्च्य सकृन्नरः ।
आभूत सम्प्लवं यावच्छिवलोके वसेन्मुदा
॥२४॥
पवित्रपर्वणि सदा श्रावणे मासि यत्नतः ।
लिङ्गे पवित्रमारोप्य महादेवे न गर्भभाक्
॥२५ । (काशी खण्ड अ०

**अर्थ** वाराणसी में लिङ्गरूप महादेव का जिन्होंने दर्शन किया ने त्रैलोक्य स्थित लिङ्गों का दर्शन कर लिया इसमें कोई सन्देह नहीं। मनुष्य एक बार वाराणसी में महादेव की पूजा करके प्रलय पर्यन्त शिवलोक में निवास करता है। पवित्र पर्व में तथा प्रयत्नपूर्वक श्रावण मास में शिव लिङ्ग पर पवित्री आरोपित कर मनुष्य गर्भवास से मुक्त हो जाता है।

## श्रावण शुक्ल

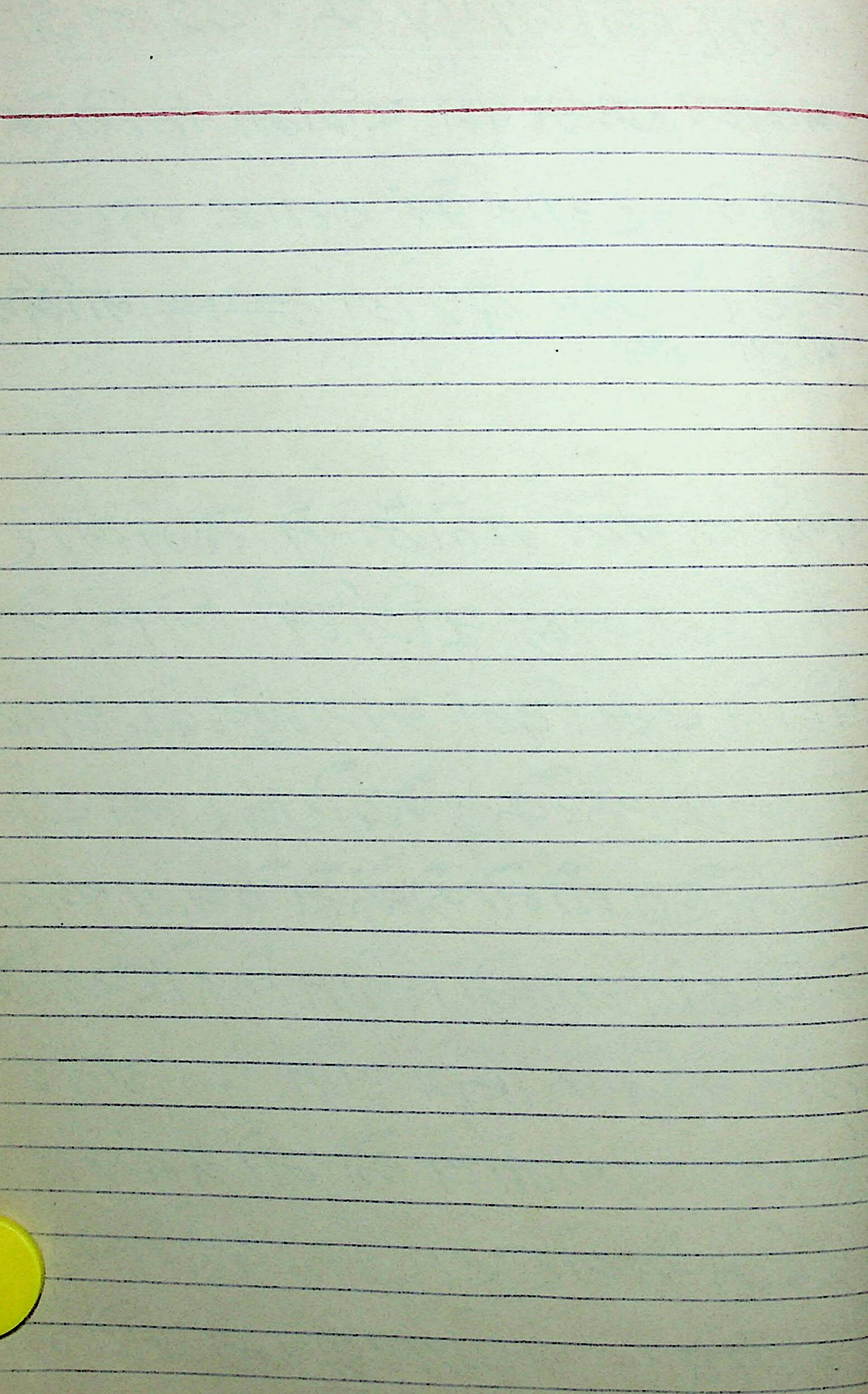


काशी की वार्षिक ~~म~~ दर्शन यात्रा

श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा तिथि के दिन केदार घाट में स्नान करके केदारेश्वर दर्शन ~~यात्रा~~ वार्षिक यात्रा करें।

नाभोमासि विधोर्वारे पौर्णमास्यां विशेषतः।
श्रीमत्केदार सेवार्थं मागच्छन्ति त्रिलोकगाः॥

अर्थ- श्रावण महीने मे सोमबार के दिन जब पूर्णिमा तिथि पड़ा हो उस दिन प्रातः केदार घाट में स्नान करके केदारेश्वर का दर्शन करने हेतु तीनो लोकों से देवता काशी के केदार घाट में स्थित केदारेश्वर के दर्शन करने के लिये आते है। अतः सभी मनुष्यमात्र को भी प्रयत्न पूर्वक केदारेश्वर का दर्शन करना चाहिये। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन काशी के अमर नाथेश्वर



काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

~~श्वर~~ दर्शन-पूजन की वार्षिक यात्रा करें। अमरनाथेश्वराय नमः

मन्दिर ~~मकान~~ नम्बर बी० में है ~~को बाँके घाट~~
पूर्व 5

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन वार्षिक श्रावणी ब्राह्मणों का महापर्व है, उस दिन अवकाश लेकर प्रयत्न पूर्वक श्रावणी करना चाहिये। श्रावणी के पश्चात् रक्षाबन्धन बाँधना चाहिये।

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तिथि के दिन गङ्गा आदि (नदी ? तीर्थ) में स्नान करके शिव पूजा करने के पश्चात्। सीधा, मिष्टान्न, फल एवं वस्त्र रूपीया आदि दान करें। ब्राह्मण को भोजन

काशी की वार्षिक यात्रा

" भाद्र मास परारम्भ "

करीं कर भोजन करें।) भाद्र कृष्ण प्रथम रविवार के दिन विमला दित्य दर्शन, पूजन वार्षिक दर्शन यात्रा करें। विमला दित्य सूर्यायनमः [~~मकान~~ मन्दिर, नम्बर में है मुहल्ला खारी कुंवा जंगमवाड़ी हरीकेश्वर के बगल में है। विमला दित्य के दर्शन, पूजन करने वाले नर-नारियों के कैसा भी कुष्ट रोग (कोर) हो इन के उपासना से ~~सब~~ सब और कैसा भी चर्म रोग हो वह सब अच्छे होते है। साथ ही अपनी भक्ति भी देते है।

भाद्र ~~शुक्ल~~ कृष्ण प्रतिपदा तिथि के दिन जागेश्वर दर्शन, पूजन

काशी की वार्षिक दर्शन यात्रा

वार्षिक यात्रा करें। जागेश्वर स्वयं भू शिव लिङ्ग है, जो स्त्री, पूरुष जो भी मनोरथ लेकर इन के पास जाते है। उस मनोरथ को पूर्ण करते है, और इन के दर्शन से ग्रह आदि भी शान्त होते है। इस किस्म के शिव लिङ्ग अन्यत्र दर्शन नही होते है। जागेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर में है मुहल्ला नरहरीपुरा ईश्वर गङ्गी।] भाद्र कृष्ण तृतीया तिथि के दिन विशालाक्षी गौरी विशाल तीर्थ मीर विश्वनाथ घाट में स्नान दर्शन पूजन वार्षिक यात्रा करें।

(अर्क विनायक)

शुचि शुक्ल चतुर्दश्यां पञ्च दश्यामथापि वा।
कृत्वा सांवत्सरीं यात्रामनेना जायते नरः ॥२७॥
काशीखण्ड अ० ५५ ]

अर्थ —

शुचि (ज्येष्ठ) मास की चतुर्दशी तथा और अमा (पूर्णिमा) में साम्वत्सरी यात्रा करके मनुष्य निष्पाप हो जाता है।

मकान नम्बर लिखना शेष यह है

वाराही योगिनी नम्बर — त्रिपुरा भैरवी घाट
अत्रीश्वराय नमः नम्बर —
विर माधव नम्बर — मीरघाट
विर रामेश्वर (रामघाट

रघुनाथेश्वर नम्बर — मानमन्दिर घाट
अयोध्या रामेश्वर — हनुमान घाट
वसिष्ठ रामेश्वर — रामकुण्ड
कृत्तिवासेश्वर — हरतीर्थ
त्रिलोचनेश्वराय नमः — त्रिलोचनेश्वर
परशुरामेश्वर — नन्दन साहु मु०
गंगेश्वर — भागीरथी का घाट
पञ्चगंगेश्वर — पञ्चगंगा
राजराजेश्वरी — ललिता घाट
~~[illegible]~~

| | |
|---|---|
| प्रह्लादनृसिंह नं | प्रह्लाद घाट |
| अङ्गीरसेश्वर नं | मत्स्येश्वर |
| वैजनाथेश्वर | वैजनाथ |
| बृहस्पतीश्वर | दशाश्वमेध |
| नरसिंह (विष्णु) | हनुमान घाट |
| गड़ेश्वर | दशाश्व |
| गोतमेश्वर | सप्तसागर |
| ज्येष्ठविनायक | सं |
| ज्येष्ठेश्वर | काशीपुरा |
| उत्सरेश्वर | चौकीघाट |
| एकमाड़ देश्वर | कालिकागली |
| महाकाली देवी | देउनाथपुरा |
| सवकाली | मणिकर्णीका घाट |
| वेदेश्वरायतनमं | कर्णघण्टा |
| व्यासेश्वर | मृत्युंजय |
| वृधकालेश्वर | देउनाथ |
| गरुरेश्वर | मृत्युंजय |
| पुरुदरेश्वर | अघोरनाथ कीनाकिया |
| तारकेश्वर | अघोर |
| वासुकीश्वर | शिवाला |
| अन्तक्षेत्रेश्वरी | जौनपुर |
| बागेश्वर | |

~~इस काशीमें अनेक सन्ना मन्दिरसे केनम्बर~~
~~मिरवनाशेष है।~~

| | |
|---|---|
| तिलपाण्डेश्वर | शिवाला |
| हयग्रीव विष्णु | रवारिकुआ |
| विमलादित्य | नरहरी |
| जागेश्वर | |

MPT
VARANASI

MADHU PAPER TRADERS,
NICHI BAGH, NAGAR MAHAPALIKA KATRA,
Page 220 VARANASI. (U.P.) Rs. 15.50